डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-aadhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

PG,5

PG,8

सिनेमाः बच्चन पांडे' से लेकर 'गंगूबाई काठियावाड़ी' तक .

वर्ष -07 अंक -345 | प्रयागराज, सोमवार 21 फरवरी, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

जयशंकर की तीन दिवसीय फ्रांस यात्रा शुरू इंडो-पैसिफिक में सहयोग के लिए यूरोपीय संघ के मंत्रिस्तरीय मंच में लेंगे भाग

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने रविवार को की अपनी तीन दिवसीय यात्रा शुरू की है। इस दौरान वह क्षेत्र में चीनी मुखरता के बीच भारत-प्रशांत में सहयोग के लिए यूरोपीय संघ के मंत्रिस्तरीय मंच में भाग लेंगे। अपनी यात्रा के दौरान जयशंकर अपने फ्रांसीसी समकक्ष ज्यां-यवेस ले ड्रियन के साथ द्विपक्षीय बैठक करेंगे। जयशंकर 22 फरवरी को इंडो-पैसिफिक में सहयोग के लिए यूरोपीय संघ के मंत्रिस्तरीय फोरम में भाग लेंगे, जो यूरोपीय परिषद के फ्रेंच प्रेसीडेंसी की एक पहल है। विदेश मंत्री फोरम के इतर यूरोपीय संघ और अन्य हिंद-प्रशांत देशों के समकक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी करेंगे। वह फ्रेंच इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस (आइएफआरआइ) को भी संबोधित करेंगे।

नंदी हिल्स से गिरकर 300 फीट नीचे फंसा छात्र, वायुसेना ने हेलीकाप्टर की मदद से बचाई जान, देखें वीडियो

नंदी हिल्स। भारतीय वायुसेना का कमाल अक्सर देखने को मिलता हैं। लेकिन आज वायुसेना ने कुछ ऐसा कर दिया है जिसे देखकर सब उसकी तारीफ में लगे हैं। दरअसल, भारतीय वायुसेना और चिक्कबल्लापुर पुलिस ने रविवार शाम कर्नाटक के नंदी हिल्स से एक 19 वर्षीय छात्र को बचाया हैं। जानकारी के अनुसार छात्र एक खड़ी चट्टान से 300 फीट नीचे गिरकर फंसा हुआ था। छात्र निशंक को बचाने के लिए वायुसेना ने 17 हेलीकाप्टर का इस्तेमाल किया। पीआरओ डिफेंस के अनुसार चिकबल्लभपुर के जिला कलेक्टर ने एसओएस संदेश के साथ वायु सेना स्टेशन येलहंका से संपर्क किया कि नंदी हिल्स में ब्रम्हागिरी राक्स में एक युवा ट्रेकर फिसल कर 300 फीट नीचे गिर गया है। इसके बाद वायुसेना ने एक एमआई 17 हेलीकाप्टर को तुरंत लांच किया और एक गहन खोज के बाद फंसे छात्र को बचाया।प्राप्त जानकारी के अनुसार हेलीकाप्टर की मदद के बाद भी निशांक को बचाने में करीब 5 घंटे लगे। वायुसेना ने स्थानीय पुलिस के साथ इस आपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा किया।

यूक्रेन संकट को लेकर भारत की भूमिका और उस पर पड़ने वाले असर पर एक नजर

नई दिल्ली। कोविड-19 महामारी की विभीषिका से निकलती दुनिया के सामने अब नई विपदा

दिख रही है। यूक्रेन संकट। अंतरराष्ट्रीय मामलों के कुछ जानकार तो इसे तीसरे विश्व युद्ध की आहट के तौर पर भी देख रहे हैं। दरअसल सोवियत संघ से विघटित हुए यूक्रेन के पूर्वी हिस्से के लोगों का देश के प्रति गहरा असंतोष है। रूस इस मौके का फायदा उठाना चाहता है इससे पहले वह यूक्रेन के ही असंतुष्ट हिस्से क्रीमिया की सरहदें अपने अधिकार क्षेत्र में ला चुका है। तब दुनिया को रक्षात्मक प्रतिक्रिया तक व्यक्त करने का समय नहीं मिल सका था। इस बार रूस पूर्वी यूक्रेन के असंतोष को हवा देने का बस मौका ढूढ़ रहा था। तभी अमेरिकी नेतृत्व वाले नाटो समूह में यूक्रेन को शामिल किए जाने की पेशबंदी ने उसे मौका दे दिया। पूर्वी यूक्रेन में अलगाववाद के समर्थन में उसने अपनी सेनाओं से यूक्रेन को तीन तरफ से घेर लिया। उधर अमेरिका के नेतृत्व वाले नाटो देश भी रूस को उसकी किसी भी हिमाकत का जबाव देने को खम ठोंक रहे हैं दो देशों में युद्ध तो पहले भी होते आए हैं, लेकिन इस पर बार स्थिति विकट है। एक तरफ दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति है तो दूसरी तरफ भी दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी महाशक्ति है। जिस तरह से दुनिया के देशों के बीच खेमेबंदी जारी है उससे सामरिक मामलों के विशेषज्ञों की आशंकाएं सच साबित होती दिखती हैं। जैसे किसी भी शहर की किसी एक सड़क पर लगे जाम का असर वहां की सभी सड़कों पर दिखने लगता है, उसी तरह वैश्वीकरण के मजबूत जाल से गुंथे दुनिया के देश अब किसी भी देश में जरा सी प्रतिकूल स्थिति से अछूते नहीं रहते हैं। भले ही उनके बीच द्विपक्षी संबंध बहुत गहरे न हों। यूक्रेन मसले पर संयुक्त राष्ट्र में हुई खुली बहस से खुद को बाहर रखकर भारत ने अपने तटस्थ इरादे जाहिर कर दिए थे, लेकिन मामले को किसी नतीजे तक पहुंचाने में आज भारत की भूमिका को एकदम से दरकिनार करना भी मुश्किल है। महामारी के चलते किसी तरह से खड़ी हो रही अर्थव्यवस्थाओं के सामने फिर से चुनौती आ सकती है। ऐसे में यूक्रेन संकट को लेकर भारत की भूमिका और उस पर पड़ने वाले असर की पड़ताल आज हम सबके लिए बड़ा मुद्दा है। बढ़ेंगी पेट्रोल-डीजल की कीमतें पिछले हफ्तेभर से ज्यादा समय से क्रूड कीमतें 90 डालर के पार चल रही हैं। युद्ध हुआ तो स्थिति और बिगड़ेगी। क्रूड उत्पादन में रूस की

आंकड़ा

हिस्सेदारी 13 प्रतिशत है। यह ओपेक के कुल उत्पादन का आधा है। पश्चिमी यूरोप प्राकृतिक गैस के लिए भी काफी हद तक रूस पर निर्भर है। यदि यह आपूर्ति बाधित हुई तो वैश्विक स्तर पर महंगाई बढ़ेगी, जो निसंदेह भारत के लिए अच्छी खबर नहीं होगी। कारोबार भी होगा प्रभावित सोवियत संघ के विघटन से पहले भारत के निर्यात में रूस की हिस्सेदारी 10 प्रतिशत थी। इस समय यह घटकर एक प्रतिशत से कम पर आ गई है। आयात में भी रूस की हिस्सेदारी 1.4 प्रतिशत है। इसलिए कारोबार पर सीधे तौर पर तो बहुत असर नहीं पड़ता दिख रहा है, लेकिन रूस के साथ कारोबार बढ़ाने की भारत की कोशिशों को जरूर झटका लगेगा सैन्य आयात पर असर भारत और रूस के बीच सामान्य कारोबार भले ही कम हो, लेकिन भारत के सैन्य आयात में रूस की बड़ी हिस्सेदारी है। किसी प्रतिबंध की स्थिति में भारत के लिए रूस का विकल्प खोजना मुश्किल होगा।

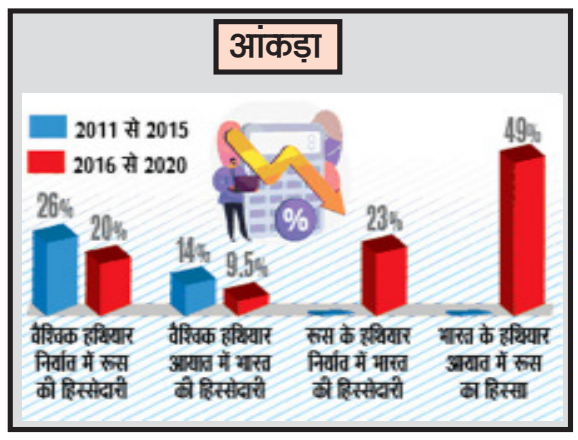

देश में कोरोना के सक्रिय मामले सवा दो लाख से कम, दिल्ली में 570 और केरल में 5,427 नए केस, जानिए अन्य राज्यों का हाल

नई दिल्ली। देश में कोरोना संक्रमण के नए मामलों में गिरावट का रुख बना हुआ है। 51 दिन बाद नए मामले 20 हजार से नीचे आए हैं। इससे कम पिछले साल 30 दिसंबर को 16,764 केस मिले थे। सक्रिय मामले भी सवा लाख से कम हो गए हैं, लेकिन मृतकों की संख्या केरल के चलते अधिक बनी हुई है। रविवार शाम को जारी हुए आंकड़ों के अनुसार दिल्ली में पिछले 24 घंटे के अंदर कोरोना वायरस के 570 नए मामले दर्ज किए गए। इस दौरान 730 लोग डिस्चार्ज हुए और 4 लोगों की मृत्यु हुई। राज्य में कोरोना के सक्रिय मामलों की संख्या 2,545 है। कुल पाजिटिविटी दर 1.04 प्रतिशत है। वहीं, केरल में पिछले 24 घंटे में कोरोना वायरस के 5,427 नए मामले सामने आए हैं। इस दौरान 9 लोगों की कोरोना से मौत हुई और 14,334 रिकवरी हुई हैं। राज्य में कोरोना के सक्रिय मामले 66,018 हैं महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटों के अंदर कोरोना वायरस के 1,437 नए मामले आए हैं। इस दौरान 3,375 लोग डिस्चार्ज हुए और 6 लोगों की कोरोना से मौत हुई। राज्य में कोरोना के सक्रिय मामले 16,422 हैं। राजधानी मुंबई में रविवार को कोरोना वायरस के 167 नए मामले आए, 286 रिकवरी हुईं और कोरोना से किसी की मौत नहीं हुई। मुंबई में कोरोना के सक्रिय मामले 1,511 हैं। कर्नाटक में पिछले 24 घंटे में कोरोना वायरस के 1,001 नए मामले आए हैं। इस दौरान 1,780 लोग डिस्चार्ज हुए और 18 लोगों की कोरोना से मौत हुई है। राज्य में कोरोना के सक्रिय मामले 12,634 हैं केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से रविवार सुबह आठ बजे अपडेट किए गए आंकड़ों के मुताबिक बीते 24 घंटे में 19,968 नए केस मिले हैं और 673 लोगों की जान गई है, जिसमें अकेले केरल से ही 524 मौतें हैं। केरल में भी बीते एक दिन में सिर्फ 16 लोगों की जान गई है, बाकी की मौतें पहले हुई हैं जिन्हें नए आंकड़ों के साथ जोड़कर जारी किया गया है। 96.26 करोड़ पहली, 77.31 करोड़ दूसरी और 1.78 करोड़ सतर्कता डोज शामिल हैं।

पीएम मोदी ने कोरोना संक्रमित हुई महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के लिए की शीघ्र स्वस्थ होने की कामना

नई दिल्ली। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के कोरोना वायरस से संक्रमित पाए जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जानसन के एक ट्वीट का हवाला देते हुए पीएम मोदी ने एक ट्वीट में कहा, 'मैं महारानी एलिजाबेथ के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं और उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करता हूं।' इससे पहले ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने ट्वीट कर कहा था कि, 'मुझे यकीन है कि मैं महामहिम महारानी के कोविड से शीघ्र स्वस्थ होने और अच्छे स्वास्थ्य में तेजी से वापसी की कामना करते हुए सभी की तरफ से बोल रहा हूं।' गौरतलब है कि ब्रिटेन की 95 वर्षीय महारानी एलिजाबेथ द्वितीय कल ही हल्के लक्षणों के साथ कोरोना पोजिटिव पाइ गईं हैं। बकिंघम पैलेस ने एक बयान में कहा कि रानी आने वाले सप्ताह में चिकित्सा सहायता प्राप्त करना जारी रखेगी और सभी उचित दिशानिर्देशों का पालन करेंगी। और उनकी पतनी कैमिला भी कोरोना संक्रमित पाए गए थे। सप्ताह के दौरान महारानी अपने बेटे के सीधे

जानकारी के अनुसार शाही चिकित्सकों और डाक्टरों की एक टीम को रानी के स्वास्थ्य की निगरानी का काम सौंपा गया है। इस महीने की शुरुआत में महारानी के बेटे और वारिस, प्रिंस चार्ल्स संपर्क में भी रहीं थीं। हैं। एलिजाबेथ द्वितीय ने साल 1952 में ग्रेट ब्रिटेन की राजगद्दी को संभाला था। वर्ष 2002 में उन्होंने ब्रिटिश के राज सिंहासन पर अपने 50 साल पूरे करने का जशन भी मनाया था।

मानदंडों से सहमी इमरान सरकार, ब्लैक लिस्ट होने पर पाकिस्तान पर क्या होगा असर जानें- एक्सपर्ट व्यू

नई दिल्ली। दो दिन बाद फ्रांस की राजधानी पेरिस में फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) की बैठक शुरू हो रही है। इस बैठक को लेकर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान की की सांसे अटकी हुई है। उनको इस बात की चिंता सता रही है कि कहीं एफएटीएफ पाकस्तिान को ब्लैक लिस्ट में न डाल दे। हालांकि, इस समय पाकिस्तान ग्रे लिस्ट में शामिल है। आइए जानते हैं कि पाकिस्तान इस ब्लैक लिस्ट से क्यों चिंतित है। इमरान सरकार की क्या मुश्किलें हैं। ग्रे लिस्ट में रहने के चलते पाकिस्तान का प्रयेक वर्ष कितना आर्थिक नुकसान हो रहा है। इससे पाकिस्तान की छवि क्यों धूमिल हो रही है। 1- प्रो. हर्ष वी पंत का कहना है कि अगर एफएटीएफ पाकिस्तान को ब्लैक लिस्ट में शामिल करता है तो उसकी अर्थव्यवस्था पर इसका प्रतिकूल असर पड़ेगा। इसका सबसे ज्यादा असर पाकिस्तान को मिल रही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक मदद पर होगा। अगर पाकिस्तान ब्लैक लिस्ट में शामिल होता है तो आइएमएफ, एडीबी, वर्ल्ड बैंक या अन्य कोई अंतरराष्ट्रीय फाइनेंशियल संस्था या संगठन उसे आर्थिक मदद नहीं करेगा। इसके साथ आयात-निर्यात पर भी कई

तरह की पाबंदियों के साथ दूसरे संगठनों से आर्थिक सहयोग में दिक्कत का सामना करना पड़ेगा। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी और अन्य दूसरी संस्थाओं द्वारा पाकिस्तान को निगेटिव लिस्ट में डाल दिया जाएगा। इसका असर पाकिस्तान के निवेश पर पड़ेगा। इससे निवेश आने बंद हो जाएंगे। प्रो. पंत ने कहा कि इस समय पाकिस्तान कर्ज में डूबा है। उसकी आर्थिक व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है। पाकिस्तान पर करीब 214 लाख करोड़ भारतीय रुपये का कर्ज है। मौजूदा समय पर ग्रे लिस्ट में रहने के चलते पाकिस्तान को हर वर्ष 74 हजार करोड़ का नुकासान हो रहा है। 2- प्रो. पंत का कहना है कि एफएटीएफ की बैठक में बहुत सख्ती से इस बात पर ध्यान दिया जाएगा कि इमरान सरकार ने आतंकी फंडिंग और बड़े आतंकियों के खिलाफ क्या कार्रवाई की और इसके सबूत कहां हैं। एफएटीएफ इस बात को बहुत बारीकी से देखेगा कि पाकिस्तान सरकार ने देश में मौजूद हाफिज सईद और दूसरे बड़े आतंकियों के खिलाफ कितने मजबूत केस तैयार किए है। यह भी जांच की जाएगी कि उन्हें सजा दिलाने के लिए इमरान सरकार कितनी गंभीर है। उनके खिलाफ कितनी ठोस कार्रवाई की गई है। इस बाबत पाकिस्तान को सबूत देने होंगे। फिलहाल पाकिस्तानी एजेंसियों ने अब तक ऐसी कोई कार्रवाई नहीं की है, जिससे टेरर फंडिंग को रोके जाने का सबूत मिला हो। 3- प्रो. पंत ने कहा कि एफएटीएफ के मुताबिक जब किसी देश को निगरानी सूची में रखा जाता है ।

आंध्र प्रदेश के आईटी और उद्योग मंत्री गौतम रेड्डी को दिल का दौरा पड़ने से निधन

नई दिल्ली। मेकापति गौतम रेड्डी का जन्म 31 दिसंबर 1976 हुआ था। वह एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे, जो आंध्र प्रदेश वह राज्य को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए निवेशकों को जोड़ने के लिए दुबई गए थे। 50 वर्षीय गौतम रेड्डी नियमित रूप से व्यायाम

सरकार में उद्योग, वाणिज्य और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री थे। अचानक सीने में तेज दर्द के बाद, दिल का दौरा पड़ने के कारण हैदराबाद के एक अस्पताल में ले जाया गया। जहां पर उन्होंने अपने जीवन की अंतिम सांस ली। उन्होंने हाल ही में दुबई में एक व्यापार प्रदर्शनी में भाग लिया था और वह कल ही दुबई से भारत लौटे थे। किया करते थे और उनका अच्छा स्वास्थ्य भी था। उनके अचानक निधन से हर कोई सदमे में है। बता दें कि उन्होंने 2019 आंध्र प्रदेश विधान सभा चुनाव और 2014 आंध्र प्रदेश विधान सभा चुनाव दोनों में आत्मकुर निर्वाचन क्षेत्र से विधान सभा के सदस्य के रुप में जीत हासिल की थी।

विशाखापत्तनम में 12वें प्रेसिडेंट फ्लीट रिव्यू का आयोजन, राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने की 60 पोत, पनडुब्बियां व 55 विमानों की समीक्षा

विशाखापत्तनम। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने आज आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में 12वें प्रेसिडेंट फ्लीट रिव्यू के कार्यक्रम में शिरकत की। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के साथ तीनों सेनाओं के प्रमुख भी मौजूद हैं। इस दौरान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को 12वें प्रेसिडेंट फ्लीट रिव्यू कार्यक्रम में गार्ड आफ आनर दिया गया। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद नौसेना के स्वदेश निर्मित अपतटीय गश्ती पोत आईएनएस सुमित्रा पर सवार हुए। इसके बाद ईस्टर्न नेवल कमांड ने राष्ट्रपति फ्लीट रिव्यू के 12वें संस्करण के दौरान 21 तोपों की सलामी दी। इस मौके पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी मौजूद हैं। बता दें कि, राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने 60 से अधिक जहाज और पनडुब्बियों समेत 55 विमानों वाले भारतीय नौसेना बेड़े की समीक्षा की। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर विशाखापत्तनम में राष्ट्रपति के बेड़े की समीक्षा का 12वां संस्करण आयोजित किया जा रहा है। दरअसल, राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद सबसे पहले विशाखापत्तनम में आयोजित 12वें

प्रेसिडेंट फ्लीट रिव्यू कार्यक्रम में पहुंचे। यहां उन्हें गार्ड आफ आनर दिया गया। इसके बाद राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद नौसेना के स्वदेश निर्मित अपतटीय गश्ती पोत आईएनएस सुमित्रा पर सवार हुए। इस दौरान राष्ट्रपति ने आईएनएस सुमित्रा में सवार होकर नौसेना के बेड़े की समीक्षा की। इनमें आईएनएस तरंगिनी, आईएनएस ज्योति, आईएनएस सुदर्शनी, 51, आईएनएस कुलिश, सागर अन्वेषिका, आईएनएस जमुना, घ्ण्उए वरद, शौनक, आईएनएस सुतलेज, आईएनएस सर्वेक्षक, आईएनएस कमरोटा शामिल हैं। 12वें प्रेसिडेंट फ्लीट रिव्यू का विशेष महत्व है कि इसे भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर पूरे देश में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मनाया जा रहा है। इसके अलावा समीक्षा के बाद रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और संचार राज्य मंत्री देवुसिंह जे चौहान की उपस्थिति में माननीय राष्ट्रपति द्वारा एक विशेष फर्स्ट डे कवर और एक स्मारक डाक टिकट जारी किया जाएगा। लंगरगाह में जहाजों को दिन के दौरान पूरे राजसी अंदाज में विभिन्न नौसैनिक झंडों के साथ औपचारिक रूप से तैयार किया जाएगा।

जिले की चमक योगी की देन : वाचस्पति

(आधुनिक समाचार सेवा)
राकेश मिश्रा

शंकरगढ़(प्रयागराज)। भाजपा सहयोगी दल अपना दल एस से बारा विधानसभा प्रत्याशी वाचस्पति ने शनिवार को शंकरगढ़ के दर्जनों गांवों का तूफानी दौरा कर डोर टू डोर जनसंपर्क किया । इस दौरान कपारी ,जोरवट ,बकुलिहा ,गोरखा ,बेमरा ,नौका , रानीगंज आदि कई गांवों में पहुँचकर वाचस्पति ने अपने पक्ष में वोट देकर योगी आदित्यनाथ जी को सूबे का दूसरी बार मुख्यमंत्री बनाने की अपील की । भाजपा सहयोगी दल अपना दल एस प्रत्याशी वाचस्पति ने कहा कि आज हर वर्ग भाजपा के साथ खड़ा है । और सभी वर्ग प्रदेश की खुशहाली और विकास के रास्ते पर ले जाने के लिए योगी आदित्यनाथ जी को दोबारा सीएम बनाना चाहता है । क्षेत्र की जनता का समर्थन बता

रहा है कि बारा विधानसभा में सबसे बड़ी जीत होने जा रही है । उन्होंने उपस्थित लोगों से अधिक से अधिक सहयोग और समर्थन मांगा साथ ही कहा कि भाजपा सरकार में ही प्रयागराज का सर्वागीण विकास हुआ है । जिले की चमक प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की देन है । भाजपा सरकार में कानून का राज है । अफसर समय पर बैठकर जनता की समस्याओं का निस्तारण करते हैं । जनसंपर्क के दौरान जिलाध्यक्ष यमुनापार विभवनाथ भारतीय ,जिलाध्यक्ष भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा सुभाष सिंह पटेल ,भाजपा जिला उपाध्यक्ष जय सिंह पटेल ,अपना दल एस विधानसभा अध्यक्ष गुड्डू पटेल , अपना दल एस विधानसभा अध्यक्ष आईटी सेल अमित सिंह पटेल , भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा जिला उपाध्यक्ष अखिलेश पटेल , भाजपा मंडल अध्यक्ष शंकरगढ़ कुलदीप पटेल , जिला सोशल मीडिया प्रमुख भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा शिवम सिंह उर्फ गोरे देवरी ,पूर्व ब्लाक अध्यक्ष अपना दल पप्पन सिंह ,सभासद सुजीत केसरवानी , रतन केसरवानी आदि कई लोग मौजूद रहे ।

बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष की पत्नी का देहांत होने से अधिवक्ता परिवार में शोक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित बार के अधिवक्ताओं ने परिवार को बंधाया ढांढस

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर, प्रयागराज । तहसील फूलपुर बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष की पतनी का देहांत होने से अधिवक्ता परिवार में शोक की लहर दौड़ पड़ी। वहीं सगे संबंधियों सहित बुद्धिजीवियों ने पीडित परिवार के घर पहुंचकर मृतक की आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की तथा परिजनों को ढांढस बंधाया। फूलपुर तहसील क्षेत्र अंतर्गत चंदरपुर उर्फ बसमहुआ गांव निवासी शिवपूजन तिवारी (एसपी तिवारी) जो कि तहसील फूलपुर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे हैं तथा वरिष्ठ अधिवक्ताओं में से जाने जाते हैं। इसी क्रम में शनिवार की रात लगभग 12:30 बजे उनके पत्नी की तबियत अचानक खराब हो गई। यह देख परिवार के सदस्यों ने उन्हें तत्काल शहर के अस्पताल में इलाज हेतु ले गए जहां देर रात 2:00 बजे उनकी मृत्यु हो गई। यह सूचना जैसे ही परिवार व रिश्तेदारों को हुई तो शोक की लहर दौड़ पड़ी तथा घर में कोहराम मच गया। वहीं सुबह होते ही यह समाचार फूलपुर अधिवक्ता संघ सहित जनपद न्यायालय तक के अधिवक्ताओं तक पहुंच गई। जिसे सुनकर तहसील फूलपुर सहित प्रयागराज जनपद न्यायालय के अनेकों सम्मानित अधिवक्ताओं व बुद्धिजीवियों ने पहुंचकर परिवार को दुःख सहन शक्ति हेतु ढांढस बंधाया तथा मृतक की आत्मा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। शिवपूजन तिवारी के पांच पुत्र हैं जिनमें से शशिकांत त्रिपाठी जो कि जनपद न्यायालय में अधिवक्ता हैं तथा आशीष त्रिपाठी जो कि फूलपुर तहसील में अधिवक्ता हैं। वहीं दोपहर लगभग 1:00 बजे छतनाग घाट पर अंतिम संस्कार किया गया। इस दुःख की घड़ी में इलाहाबाद सिविल न्यायालय के पूर्व अध्यक्ष राकेश तिवारी, फूलपुर अधिवक्ता संघर्ष समिति के अध्यक्ष शमीम अहमद तूफानी, फूलपुर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अरविंद यादव, उपाध्यक्ष विजय कुमार यादव, पूर्व अध्यक्ष कामता प्रसाद गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष शंकर सिंह, पूर्व उपाध्यक्ष रमेश कुमार मिश्र (कोलाही), सौरभ यादव, श्यामजी यादव, देवेश यादव, चंद्रभान यादव, धर्मराज यादव, राजीव वर्मा, प्रकाश चन्द्र, एजाज अहमद, दिनेश कुमार, शिवम् शुक्ला, रितेश पटेल, आदेश शुक्ला, भाजपा के महामंत्री मनोज निषाद, महामंत्री जीतलाल त्रिपाठी, समर्थकों सहित विधायक मुज्तबा सिद्दीकी, शशिकांत मिश्र, रविकांत मिश्र, सहित अधिवक्ताओं व नेताओं तथा अनेकों बुद्धिजीवियों ने पहुंचकर दुःख जताया तथा श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रतापपुर की जनता का आपार समर्थन मिल रहा है चुनाव जीतने के बाद विकास की गंगा बहेगी डॉक्टर राकेश धर त्रिपाठी

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज। विधान सभा प्रतापपुर के बेल्हा बांध में अपना दल एस एव भाजपा गठबंधन प्रत्याशी डॉक्टर राकेश धर त्रिपाठी के समर्थन में कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया कार्यकर्ता

सम्मेलन को संबोधित करते हुए विधान सभा प्रतापपुर के अपनादल भाजपा गठबंधन प्रत्याशी ने ने पूर्ववर्ती सपा सरकार पर करारा हमला बोला।उन्होंने कहा कि यूपी में पहले अराजकता, सत्ता प्रायोजित दंगे, अपराध व अराजकता का तांडव होता था। कोई अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करता था। भाजपा सरकार ने जो काम किया उससे न कोई दंगा हुआ न महिलाओं व व्यापारियों का उत्पीड़न हुआ।उन्होंने कहा कि पांच साल पहले प्रतापपुर और प्रदेश में क्या होता था यह किसी से छिपा नहीं है। अब कफ्र्यू का स्थान कांवड़ यात्रा ने ले लिया है। चारों ओर अराजकता का माहौल था सपा ने दर्जन भर आतंकियों के मुकदमों को वापस लिया आगे कहा घर-घर बिजली मिल रही है। उन्होंने कहा कि विधान सभा प्रतापपुर में चुनाव के समय मे लोग आते है और फिर जितने के बाद पांच साल छेत्र में दिखाई नही देते है हमने आपके बगल विधानसभा हँड़िया का भी विधायक मंत्री रहते हुए विकास के नाम पर काफी काम किया था आज इतनी बड़ी भीड़ जो आई है प्रतापपुर की जनता का जो आपार समर्थन हमे मिल रहा है चुनाव जीतने के बाद जो भी मूल भूत समस्याये है उसको प्राथमिकता के तौर पर पूरा करने का काम करूंगा चाहे स्कूल हो सड़क हो स्वास्थ्य की समस्या हो चाहे सड़क की समस्या हो सभी को पूरा करने का काम करूंगा कार्यकर्ता सम्मेलन में मुख्यरूप से श्रीमती पूनम पटेल प्रदेश महासचिव अपना दल डॉक्टर मोहम्मद इमाम अमरनाथ यादव छेत्रीय उपाध्यक्ष काशी भाजपा पंकज बाँध ईश्वर चन्द्र बिन्द डॉक्टर एसके बिन्द समरजीत मौर्य श्याम लाल बाँध मदन लाल बाँध धर्म लाल बिन्द समेत हज़ारो की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सर्वसमाज के लोगों का मुज्तबा सिद्दीकी को समर्थन नसीरुद्दीन राईन

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज । 256 विधानसभा के समाजवादी पार्टी प्रत्याशी विधायक हाजी मुजतबा सिद्दीकी

के समर्थन में ग्राम सभा पूरे सूदी से सैकड़ों सपाइयों ने साईकिल रैली पूरे सुदी परासिनपुर लोचनन गंज फरीदाबाद शेखपुर आजाद नगर होते हुए इफ्को समाजवादी पार्टी कार्यालय में समाप्त हुई इस दौरान जिला उपाध्यक्ष नसीरुद्दीन राईन ने कहा कि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की लहर है अखिलेश यादव जी की पूर्ण बहुमत में सरकार बनने जा रही है प्रदेश की जनता भाजपा सरकार में भूख भय भ्रष्टाचार अत्याचार महंगाई से निजात पाने के लिए सपा सरकार की कार्य काल याद कर रही है अखिलेश यादव का वादा है प्रदेश में सपा सरकार बनते ही तीन सौ युनिट बिजली मुफ्त महिलाओं को अठ्ठारा हजार वार्षिक समाजवादी पेंशन व छात्रों को लैपटॉप मुफ्त जैसे बाईस में बाईस संकल्प जो गरीबों किसानों नौजवानों छात्रों महिलाओं व्यापारियों के हितों को ध्यान रखते हुए विकास करेंगे कार्यक्रम का संचालन सयुस विधानसभा अध्यक्ष कुमार मंगल ने किया इस दौरान विवेक यादव,मनोज कुमार,संजय सिंह, विकास यादव, पुष्पेन्द्र यादव, फूलचंद यादव,यहिया सिद्दीकी,रंजीत कुमार,राजबलि सिंह,अनुपम यादव राकेश सिंह, राजेंद्र भारती, सुरेश यादव, सभाजीत पाल,आदि लोग मौजूद रहे।

शहर दक्षिणी के भाजपा प्रत्याशी नंद कुमार नंदी जी ने जनसंपर्क किया

प्रयागराज । शहर दक्षिणी के भाजपा प्रत्याशी नंद कुमार नंदी संघर्षशील एवं पूर्व विधायक के जनसंपर्क के दौरान मुट्ठीगंज मैं जनता का हुजूम भारी संख्या में अपने प्रत्याशी से मिलने के लिए गुंजा जय श्री राम का नारा उसी बीच में प्रत्याशी का जन समर्थक ने कहा मुट्ठीगंज में जनता का रेला है हम सबके बीच में हमारा नंदी अकेला है साथ में जनता ने फूल माला से अपने पूर्व विधायक एवं पुनः प्रत्याशी के रूप में फूल माला से भरपूर स्वागत किया साथ में जनता का मिल रहा भरपूर समर्थन प्रयागराज भारतीय जनता पार्टी शहर दक्षिणी से संघर्षशील प्रत्याशी नंद कुमार नंदी क्षेत्र में लगातार जनसंपर्क कर रहे हैं जनसंपर्क के दौरान जनता का भरपूर समर्थन और सहयोग मिल रहा है पूर्व विधायक नंद कुमार नंदी द्वारा कोरोना काल मे किए गए कार्यों राशन वितरण मास्क आदि वितरण से शहर दक्षिणी की जनता में समाज सेवी के नाम से जाने जाने वाले नंद कुमार नंदी क्षेत्र में कराए गए विकास कार्यों के कारण जनता का भरपूर सहयोग और समर्थन मिल रहा।

बसपा भाजपा छोड़ कई पदाधिकारी सपा में शामिल

(आधुनिक समाचार सेवा)
राकेश मिश्रा

बारा प्रयागराज। बारा विधानसभा में आज श्रीनाथ सत्यनारायण इंटर कॉलेज जसरा प्रयागराज में समाजवादी प्रत्याशी अजय भारती मुनन और कई सपा पदाधिकारियों के समक्ष ग्राम प्रधान पांडर सुरेंद्र सोनकर भाजपा मंडल अध्यक्ष पद छोड़कर सपा में हुए शामिल वही बहुजन समाज पार्टी के वरिष्ठ नेता रामचन्द्र सोनकर बहुजन समाज पार्टी को छोड़कर अपने साथियों के साथ सपा में हुए शामिल इस कार्यक्रम में मौजूद रमेश तिवारी पारुल हसन गुड्डू सिंह दिनेश तिवारी उपेंद्र दुबे अंबिका प्रसाद त्रिपाठी कृपाशंकर,आशीष त्रिपाठी,(गुड्डू),साचोन्द्र द्विवेदी,(हसान)अनूप त्रिपाठी,(पारूल), गिरजा पांडे सुनील दुबे मुकेश तिवारी आदि लोग मौजूद रहे।

प्रत्याशी दें आपराधिक मुकदमे की जानकारी :डीएम

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी नितिन बंसल ने बताया कि उच्चतम न्यायालय एवं भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्गत निर्देश के क्रम में प्रत्याशियों को आपराधिक मुकदमे की जानकारी देनी होगी अन्यथा उन पर विधिक कार्यवाही हो सकती है। निर्देशित किया गया कि प्रत्याशी आयोग द्वारा निर्धारित प्रारूप फार्म-सी-1 पर अपने आपराधिक इतिहास का विवरण समाचार पत्र एवं टीवी पर प्रकाशित करायेगें। प्रथम बार प्रकाशन नाम वापसी के प्रथम चार दिनों के अन्दर, द्वितीय बार नाम वापसी के पाँचवे और आठवे दिन के मध्य तथा तृतीय बार नाम वापसी के नौवे दिन से प्रचार समाप्ति के पूर्व प्रकाशन कराना होगा। उन्होंने बताया है कि किसी राष्ट्रीय अखबार एवं जनपद से प्रकाशित स्थानीय सर्वाधिक प्रसार वाले अखबार में विज्ञापन कराया जाना है ताकि आम मतदाता को इस सम्बन्ध जानकारी प्राप्त हो सके। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया गया कि कुछ प्रत्याशियों द्वारा अभी तक अपने आपराधिक विवरण का प्रकाशन नही किया गया है, वह अविलम्ब प्रकाशन करायें। यह आयोग एवं उच्चतम न्यायालय के निर्देशों का उल्लंघन है। उन्होंने कहा है कि जिन प्रत्याशियों द्वारा अभी तक प्रकाशन नही कराया गया है उन्हें आयोग द्वारा निर्धारित फार्मेट सी-तृतीय के माध्यम उन्हें अनुस्मारक निर्गत करने का निर्देश दिया गया है।

मतदाता जागरूकता रंगोली प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रतापगढ़। मतदाताओं को मतदान हेतु जागरूक एवं प्रेरित करने के उद्देश्य राजकीय इण्टर कालेज प्रतापगढ़ में जनपद स्तरीय रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रंगोली की इस भव्य एवं आकर्षक प्रतियोगिता में डी0

एल0 एड0,बी0टी0सी0एवं बी0 एड0 महाविद्यालय के प्रशिक्षु छात्र -छात्राओं ने प्रतिभाग करते हुए मतदाता जागरूकता हेतु भव्य रंगोली बनाकर दिनांक 27 फरवरी को जनपद में होने वाले विधानसभा चुनाव में शत् प्रतिशत मतदान करने का संदेश दिया। सीडीओ ईशा प्रिया ने रंगोली का अवलोकन किया।वह प्रतिभागियों के प्रयास की सराहना कीं।रंगोली प्रतियोगिता में डायट अतरसण्ड प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान पी0बी0पी0जी कालेज प्रतापगढ़ व तृतीय स्थान पर डॉ0जयमंगल सिंह शिक्षण संस्थान भुपियामऊ की छात्रायें रही। इस अवसर पर मतदाता जागरूकता हेतु हस्ताक्षर अभियान के अन्तर्गत सभी प्रतिभागियों ने हस्ताक्षर भी किया। कार्यक्रम में उप निदेशक डायट मो0इब्राहिम,जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानन्द सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

भारतीय जनता पार्टी के नेता के घर में बने ऑफिस मैं लाखों की लूट

आधुनिक समाचार सेवा
अजय कुमार गुप्ता

प्रयागराज के अतरसुइया थाना अंतर्गत मीरापुर इलाके में बिजनेसमैन नरेश कुन्दा के ऑफिस में लाखों की लूट, दो नकाबपोश बदमाशों ने घटना को दिया अंजाम, घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद दिनदहाड़े हुई इस घटना से लोगों में दहशत का माहौल भी बना हुआ है नकाबपोश बदमाशों ने ऑफिस के अंदर एंट्री की और बंदूक की नोक पर वहां से रुपए लूटकर फरार हो गए यहां तक नहीं बल्कि बदमाशों ने एक दो राउंड वहां पर फायरिग भी की है सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गया अब पुलिस सीसीटीवी कैमरे के आधार पर नकाबपोश बदमाशों की जांच पड़ताल में जुट गई है

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 28 फरवरी 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790

वाराणसी उत्तरी के सपा प्रत्याशी अशफाक अहमद डब्लू ने कहा - 'हमारे भी पूर्वज 'श्रीराम', हम सब हिंदुस्तानी'

वाराणसी । शहर उत्तरी से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी अशफाक अहमद डब्लू ने प्रभु जय श्रीराम के नारे पर भारतीय जनता पार्टी को निशाने पर लिया है। उन्होंने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी सिर्फ और सिर्फ हिंदू मुसलमान की बात करती है। कि हम भी प्रभु श्रीराम के वंशज हैं। सीधी बात हम सभी हिंदुस्तानी हैं। इधर-उधर की बातें कर जनता के मुद्दों से भटकाने का प्रयास किया जा रहा हैअशफाक अहमद डब्लू खजुरी में अपने केंद्रीय कार्यालय के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उनका यह बयान भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ है। अब जनता भारतीय जनता पार्टी के झूठ से त्रस्त हो गई है और ऊब चुकी है। इस बार प्रदेश में बदलाव देखने को मिलेगा। शहर उत्तरी में भाजपा ने दो बार से इस सीट पर विधायक स्टांप एवं पंजीयन मंत्री राज्यमंत्री रविंद्र जायसवाल को ही टिकट दिया है, सपा ने उनके सामने अशफाक अहमद डब्लू को मैदान में उतारा है। अशफाक वर्ष 2012 में वाराणसी कैंटोमेंट सीट से विधानसभा चुनाव लड़े थे। हालांकि इसमें उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। वर्ष 2017 के चुनाव में डब्लू ने शहर दक्षिणी से टिकट की दावेदारी की थी। सपा की ओर से इस पर सहमति जताते हुए टिकट भी दे दिया गया था, लेकिन समझौते में सीट कांग्रेस के पास चले जाने से उन्हें मौका नहीं मिल पाया था। होटल व स्क्रैप कारोबारी परिवार के अशफाक अहमद लंबे समय से सपा में जुड़े हैं। पार्टी में इनका अच्छा खासा प्रभाव भी है। समाजवादी पार्टी ने नामांकन के अंतिम दिन की पूर्व संध्या पर इन्हें टिकट देकर विपक्षी दलों को चौंका दिया था।

वास्तव में उनके पास जहित के लिए कोई मुद्दा ही नहीं है। इसे छिपाने के लिए भगवान का सहारा लेती है। उसे ध्यान रखना चाहिए इंटरनेट मीडिया पर वायरल हो गया है। अशफाक कहते हैं कि प्रदेश में इस बार समाजवादी पार्टी की लहर चल रही है और पूरा माहौल

वाराणसी के आठों विधानसभा क्षेत्र में आज फाइनल होंगे प्रत्याशी, पर्चा वापसी आज

वाराणसी। विधानसभा चुनाव में नामांकन प्रक्रिया के क्रम में पर्चा वापसी दोपहर तीन बजे तक किया जा सकेगा। दोपहर तीन बजे के बाद चुनाव चिह्न का आवंटन होगा। जिला निर्वाचन अधिकारी की ओर से सभी प्रत्याशियों से सिफारिश की गई है कि पर्चा वापसी सुबह 11 बजे से दोपहर तीन बजे तक होगा। इस अवधि के बाद किसी को मौका नहीं दिया जाएगा। जिले के आठों विधानसभा क्षेत्र से कुल 145 उमीदवारों ने नामांकन किए गए थे। जांच के दौरान 76 प्रत्याशियों के पर्चे सही मिले। शेष के खारिज कर दिए गए थे। दोपहर तीन बजे के बाद निर्दल प्रत्याशियों को आयोग की ओर से निर्धारित 197 चुनाव चिह्न में डिमांड के अनुसार वरीयता क्रम में जारी होंगे। राष्ट्रीय व राज्यस्तरी पार्टियों के चुनाव चिह्न : राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय पार्टियों के लिए पहले से चुनाव चिह्न आवण्टित होते हैं। देश में इस समय नौ राजनीतिक दल को रास्ट्रीय पार्टी का दर्जा प्राप्त है। इसमें मुख्य रूप से आल इंडिया तृणमूल कांग्रेस को फ्लावर एन्ड ग्रास चुनाव चिह्न आवण्टित है तो वहीं बीएसपी को हाथी ,भाजपा को कमल का फूल, कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया को हंसिया/गेंहू की बाली, कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया मार्क्सवादी को हंसिया/हथौड़ा, नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी को घड़ी, नेशनल पीपुल्स पार्टी को किताब व कांग्रेस को हाथ का पंजा आवण्टित है। राज्य स्तरीय पार्टियों में लोकदल को हैंडपंप, सपा को साइकिल आवण्टित है। निर्दल प्रत्याशियों को डिमांड व किस्मत से मिलेगा मनमाफिक चुनाव चिह्न : विधानसभा चुनाव के नामांकन के दौरान ही प्रत्याशी की ओर से चुनाव चिह्न की डिमांड की जाती है। आयोग की ओर से निर्धारित 197 विकल्प यानी हवाई जहाज, चक्की, सीसी टीवी कैमरा, कार्पेट ,टार्च आदि में से तीन चुनाव चिह्न का विकल्प देना होता है। नाम के पहले अक्षर के वरीयता के क्रम में आवंटन होगा। एक ही नाम के अक्षर वाले ने पहले वरीयता में अगर हवाई जहाज की डिमांड की है तो लाटरी के जरिए इसका निर्धारण होता है। अब वोटिंग बढाने पर होगा फोकस : जिला निर्वाचन अधिकारी कौशल राज शर्मा ने कहा कि पर्चा वापसी व चुनाव चिह्न आवंटन के बाद नामांकन की प्रक्रिया समाप्त हो जाएगी। अब चुनाव सकुशल संपन्न कराने के साथ ही मतदान प्रतिशत बढ़ाने पर सर्वाधिक जोर होगा। स्वीप की ओर से इस बाबत पिछले एक माह से शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में अभियान चलाया जा रहा है।

दस विधानसभा वाला 'आजमगढ़' तय करेगा सत्ता के गलियारे का रास्ता

आजमगढ़ । विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन की तिथि बीतते ही सियासी 'चौसर' सज गया है। 133 उम्मीदवारों के सामने आते ही 'कुर्सी की जंग' त्रिकोणीय हो चली है। सपा-बसपा 'गढ़' को बचाए रखने को पूरी ताकत झोंके पड़ी है, तो आजमगढ़ की ऊसर जमीन में वोटों का फीसद दो चुनावों में बढ़ने से उत्साहित भाजपा कई सीट जीतने को दांव लगाई है। राजनीतिक गणितज्ञ अपने-अपने सेनापतियों की राह आसान करने को जातीय समीकरण साधने संग जोड़-तोड़ की जुगत में हैं। ऐसे में सिकंदर कौन होगा, सटीक कहना मुश्किल है, लेकिन अंतिम सांस तक लड़ने वाले के सिर ही सजेगा जीत का ताज...। आठ बार के विधायक व पूर्व मंत्री सपा प्रत्याशी दुर्गा प्रसाद यादव फिर से मैदान में हैं। 30 फीसद सवर्ण मतदाता वाली सीट पर कांग्रेस के प्रवीण सिंह, भाजपा के अखिलेश मिश्र व बसपा ने सुशील सिंह को उतारा है। सवर्ण प्रत्याशी तीन होने के बावजूद दुर्गा को दम दिखाना पड़ेगा, क्योंकि 21 फीसद एससी, 12 फीसद मुस्लिम कोई भी गुल खिला सकते हैं। बीते चुनाव में वोट की लंबी लकीर खींच चुके भाजपा के अखिलेश अबकी आशान्वित हैं, तो सुशील की उम्मीदों को भी कम नहीं आंका जा सकता है। प्रवीण का जुझारूपन भी बहुतों को पसंद है। यहां से बसपा विधायक शाह आलम गुड्डू जमाली अबकी ओवैसी की पार्टी के प्रत्याशी हैं। 30 फीसद पिछड़े मतदाता वाली सीट पर सपा के अखिलेश यादव कुछ सैकड़ा वोटों से हारते थे, लेकिन बसपा से अब्दुस्सलाम, कांग्रेस से परवीन मंदे ने लड़ाई को उलझा दिया है। उलझी जंग में भाजपा के अरविंद जायसवाल जी-जान से जुटे हैं। यहां 27 फीसद सवर्ण, 24 फीसद अनुसूचित व 16 फीसद मुस्लिम मतदाताओं में समीकरण साधने के महारथी के सिर ही सजेगा जीत का ताज। 45 फीसद पिछड़ा मतदाताओं वाली सीट पर सपा से डा. एचएन पटेल, बसपा से शंकर यादव, कांग्रेस से राना खातून चुनावी मैदान में हैं, तो भाजपा ने यहां बसपा की विधायक रहीं बंदना सिंह पर दांव खेला है। यहां 22 फीसद सवर्ण, 27 फीसद अनुसूचित व 12 फीसद मुस्लिम मतदाताओं को लेकर उम्मीदवारों के अपने-अपने तर्क हैं। यहां सपा के जयराम पटेल के बगावत को दूसरे दलों के जीत का हथियार मानने से लड़ाई त्रिकोणीय मुकाबले में जा फंसी है। सपा विधायक नफीस अहमद फिर से मैदान में हैं। यह सीट परंपरागत सपा की रही है। 14 फीसद मुस्लिम, 29 फीसद पिछड़े मतदाताओं का समीकरण सब पर भारी पड़ता है, लेकिन अबकी छात्र जीवन से राजनीति कर रहे मिर्जा शाने आलम बेग और बसपा के रमेश यादव के उतरने से वोटों के बिखराव की आशंका है। भाजपा के सत्येंद्र राय को 28 फीसद सवर्ण तो रमेश को 24 फीसद अनुसूचित मतदाताओं से उम्मीद है। ऐसे में त्रिकोणीय लड़ाई किस करवट बैठेगी, कहना मुश्किल है। फिर से मैदान में उतरे बसपा विधायक आजाद अरिमर्दन के मुकाबिल भाजपा ने पूर्व सांसद नीलम सोनकर को उतारा है। वर्ष 2019 में सपा-बसपा के गठबंधन के बावजूद लालगंज में मजबूती से लड़ी थीं। 39 फीसद सवर्ण मतदाताओं वाली सीट से भाजपा को उम्मीद है। 29 फीसद पिछड़े मतदाता सपा के बेचई सरोज की उम्मीद जरूर हैं, जो बीते चुनाव तीसरे स्थान पर थे। अब 25 फीसद अनुसूचित मतदाता लड़ाई को कितना मजबूत करेंगे, कहना मुश्किल है। सपा विधायक आलमबदी फिर से मैदान में हैं, लेकिन बसपा के डा. पीयूष सिंह यादव, भाजपा के मनोज यादव और कांग्रेस के अनिल यादव के मैदान में उतरने से उनकी राह कठित प्रतीत हो रही है।

विधान सभावार प्रेक्षकों ने देखा अपना स्ट्रांग रूम

गाजीपुर । जिला निर्वाचन अधिकारी मंगला प्रसाद सिह एवं पुलिस अधीक्षक रामबदन सिंह ने पुलिस प्रेक्षक तुषार ताबा व सभी विधान सभा के प्रेक्षकों के साथ

नवीन कृषि मंडी जंगीपुर में बनाए गए स्ट्रांग रूम व मतगणना स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान सभी प्रेक्षकगणों के साथ जिला निर्वाचन अधिकारी एमपी सिंह ने पोलिग पार्टी रवानगी स्थलों का ब्लू प्रिट दिखा कर व्यवस्थाओं को समझाया। कहा कि इस दौरान रवानगी स्थलों पर मोबाइल शौचालय, लाइट, पानी की उचित व्यवस्था की जाए। प्रेक्षकों को बताया कि कहां पर वाहनों की पार्किंग होगी। पार्किंग विधान सभावार व मतदान केंद्र वार की जाएगी। नवीन स्टेडियम गोराबाजार से विधानसभा सदर एवं जंगीपुर की पोलिग पार्टियां रवाना होंगी। स्वामी सहजानंद पीजी कालेज से विधान सभा जहूराबाद, आईटीआई कालेज तुलसीपुर से विधानसभा जखनियां, पालिटेक्निक कालेज रौजा से विधानसभा जमानिया, लंका मैदान से विधान सभा मुहम्मदाबाद तथा सानातनधर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोराबाजार से विधानसभा सैदपुर की पोलिग पार्टियों की रवानगी होगी। इस अवसर पर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट पवन कुमार मीणा, अपर जिलाधिकारी व उप जिला निर्वाचन अधिकारी अरूण सिंह, अपर जिलाधिकारी भू राजस्व सुशील लाल श्रीवास्तव के साथ सभी रिटर्निंग आफिसर, अधिशासी अभियंता नगर पलिका लालचंद सरोज एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सेक्टर मजिस्ट्रेट बूथों का करते रहे निरीक्षण : एसडीएम

जमानियां (गाजीपुर) : आगामी सात मार्च को होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर अधिकारी एक्टिव मोड़ में आ गए हैं। रविवार को उपजिलाधिकारी भारत भार्गव ने लोक निर्माण विभाग के डाक बंगला में चुनाव ड्यूटी में लगे कर्मचारियों व पुलिस संग बैठक कर चुनाव संबंधित दिशा निर्देश दिया, साथ ही तैयारियों का जायजा लिया। एसडीएम भारत भार्गव ने कर्मियों को दिशा निर्देश देते हुए कहा कि बूथों पर न्यूनतम सुविधा के साथ क्रिटिकल व बर्नेबेलिटी वाले बूथों की समीक्षा लगातार होनी चाहिए। फ्लाइंग स्क्वाड व स्टेटिक सर्विलांस टीम के अधिकारी भी अपने अपने क्षेत्र में भ्रमण करते रहेंगे ताकि बाहर से कोई अवैध सामग्री नहीं आ सके।

महाशिवरात्रि पर पूजन से मनोकानाएं होती हैं पूरी

जखनियां (गाजीपुर) : क्षेत्र के सिद्धपीठ हथियाराम मठ में महाशिवरात्रि के पर्व पर पीठाधिपति महामंडलेश्वर स्वामी श्री भवानी नन्दन महाराज के नेतृत्व में वैदिक ब्राह्मणों द्वारा परंपरानुसार असंख्य पार्थिव शिवलिग निर्मित कर विधि-विधान पूर्वक शिवोपासना किया की जाएगी। कोरोना प्रोटोकाल, चुनाव आचार संहिता एवं जनसामान्य के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए महामंडलेश्वर भवानी नन्दन यति महाराज ने श्रद्धालुओं से आह्वान किया है कि कहा कि शिव भक्त अपने घरों में ही शिव पूजन करें। महाशिवरात्रि पर यदि सच्चे मन से शिव की उपासना की जाए तो प्रभु भक्त की सभी मनोकामनाओं को पूरा करते हैं। स्वामी भवानी नन्दन यति महाराज ने महाशिवरात्रि की महत्ता पर कहा कि शिवरात्रि हर महीने में आती है।

वाराणसी में अमित शाह के आगमन से पहले भाजपा देगी सपा व बसपा को करारा झटका

वाराणसी । चुनावी प्रचार पूर्वांचल की धरती की ओर बढ़ चला है। इसमें कई समीकरण बन व बिगड़ रहे हैं। भाजपा ने भी विजय के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी है। विपक्ष पर एक के बाद एक प्रहार कर रही है। इसी कड़ी में एक ब्रम्हास्त्र छोड़ने की तैयारी हो चुकी

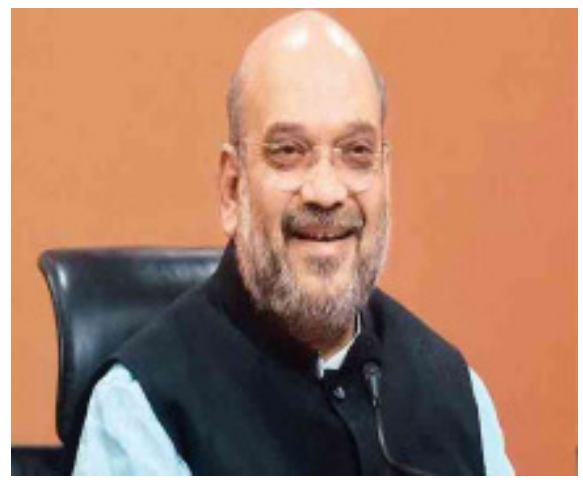

है। निशाने पर सपा व बसपा है। यह वार गृहमंत्री अमित शाह के आगमन से ठीक पहले होगा। सपा के दो दिग्गज व बसपा के एक दिग्गज भाजपा में शामिल होंगे। साथ में सैकड़ों समर्थक भी रहेंगे। रोहनिया के भाजपा काशी क्षेत्र कार्यालय में कार्यक्रम होगा। इसमें ज्वॉइनिग कमेटी के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत वाजपाई प्रमुख रूप से मौजूद रहेंगे। जिनके माध्यम से अमित शाह तक जानकारी दी जाएगी। दो दिनी दौरे पर सोमवार को काशी पहुंच रहे है । यहां नदेसर पैलेस में रात विश्राम करेंगे । शाम से लेकर देर रात तक वह वाराणसी और आसपास की 61 सीटों पर प्रत्याशियों , पार्टी के पक्ष में माहौल पर फीडबैक लेंगे । प्रोटोकॉल के मुताबिक गृहमंत्री विशेष विमान से शाम 5.30 बजे लालबहादुर शास्त्री एयरपोर्ट बाबतपुर पर पहुंचेंगे । पार्टी की कोई आधिकारिक बैठक प्रस्तावित नहीं है, लेकिन गृहमंत्री काशी क्षेत्र, महानगर व जिलाध्यक्षों के साथ ही शहर के पुराने कार्यकर्ताओं व रणनीतिकारों के साथ भी बैठक करेंगे। बैठक में प्रदेश प्रभारी व केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान भी शामिल होंगे। रात विश्राम के बाद अगले दिन प्रयागराज और प्रतापगढ़ में जनसभा को संबोधित करने रवाना होंगे । गृहमंत्री की सुरक्षा को लेकर एयरपोर्ट एयरपोर्ट पर सुरक्षा की समीक्षा हुई। टर्मिनल भवन में एडवांस सिक्योरिटी लाइजनिंग की बैठक हुई । सीआरपीएफ के कमांडेंट संदीप चौबे की अध्यक्षता में चली मीटिंग में रनवे , एप्रन की सुरक्षा परखी गई । रोहनिया में भाजपा का जो कार्यक्रम आयोजित हुआ है उसमें सपा की ओर से लोकसभा के लिए घोषित रहे दो पूर्व प्रत्याशी रहे वरिष्ठ नेता भाजपाई हो जाएंगे। इसमें एक का जुड़ाव मिर्जापुर से है तो दूसरा बनारस से। एमएलसी शतरुद्र प्रकाश की अगुवाई में भाजपा को यह सफलता मिल रही है। सपा से भाजपा में शामिल हो रहे नेताओ में एक व्यक्तिव ऐसा भी है जिसका परिवार कई पीढ़ियों से राजनीति में है। कभी कॉग्रेस में बड़ा नाम हुआ करता था। बाद में परिवार सपा की ओर बढ़ चला। अब भाजपा में राजनीतिक संभावना तलाशेगी।

वाराणसी में अर्धविक्षिप्त ने सिर पर गमले से वार कर की हत्या, थाने पर जमकर काटा हंगामा

वाराणसी। मंडुआडीह क्षेत्र के लहरतारा -कैन्ट मुख्य मार्ग पर स्थित एक अपार्टमेंट में सोमवार की सुबह राधेश्याम पांडेय (48) निवासी लहरतारा व मूल निवासी छपरा बिहार के सिर पर एक अर्धविक्षिप्त द्वारा किये गए हमले में उनकी मौत हो गयी। मौके पर पहुंची पुलिस मृतक के शव को पीएम हेतु भेज कर आरोपी को हिरासत में लेकर थाने ले आयी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सोमवार की भोर में अपने आपको कल्लू यादव बताने वाला व्यक्ति आने जाने वालों को मारपीट रहा था। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना डायल 112 पर दी लेकिन मौके पर पहुंची डायल 112 के पुलिसकर्मी भी उक्त अर्धविक्षिप्त को पकड़ने में असफल रहे तो उन्होंने अतिरिक्त फोर्स हेतु मंडुआडीह थाने पर सूचना दी। सूचना पर पहुंचे थानाध्यक्ष, लहरतारा चौकी इंचार्ज वहां पहुंचे तभी पुलिस को देख मिसिरपुर लहरतारा निवासी कुमार राजभर (45) कल्लू यादव को समझाने के लिए गए तो आरोपी विक्षिप्त ने ईंट से कुमार राजभर के सिर पर भी वार कर उसे घायल कर दिया। इसके बाद किसी तरीके से पुलिस आरोपी कल्लू को पकड़ कर थाने लायी। थाने के अंदर भी आरोपी ने जमकर हंगामा किया। मंडुआडीह थानाध्यक्ष राजीव कुमार सिंह ने बताया कि मृतक राधेश्याम पांडेय पेशे से राजगीर मिस्त्री था व राजाराम चौधरी के मकान में किराए पर रहकर अपना व परिवार का जीवनयापन कर रहा था। सोमवार की सुबह वह दूध लेने निकला था तभी हंगामा देख वह आरोपी को समझाने चले गए। जिसमें आरोपी कल्लू यादव ने गमला उठा कर राधेश्याम के सिर पर वार कर दिया व शव के ऊपर गमले फेंक दिए। इस दौरान उधर से गुजर रहे अपार्टमेंट के एक व्यक्ति पर भी हमला कर दिया, जिसमें उसे मामूली चोट आई है। मृतक की पतनै बबिता का रो-रो कर बुरा हाल था। मृतक के दो पुत्र अमन पांडेय (16), शुभम पांडेय (13) व दो पुत्री अन्नु कुमारी (14), सोनी कुमार (सात) है। वहीं थाने पर पहुंचे आरोपी कल्लू यादव के साले सोनू यादव निवासी रोहनिया ने बताया कि उसके जीजा कल्लू थे व पिछले कुछ दिनों से उनकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी और पिछली रात एक बजे से घर से वह लापता थे।

मेडिकल कालेज में एमबीबीएस की फाउंडेशन कक्षाएं शुरू

गाजीपुर । महर्षि विश्वामित्र राजकीय मेडिकल कालेज में एमबीबीएस छात्रों की फाउंडेशन कक्षाएं शुरू कर दी गई हैं। इसके बाद कोर्स शुरू किया जाएगा। यहां सृजित 100 एमबीबीएस सीटों में से 84 छात्रों ने पहले राउंड में ही प्रवेश ले लिया। शेष 16 सीटों पर 17 फरवरी से 14 मार्च तक चलने वाले दूसरे राउंड में छात्रों द्वारा प्रवेश लिया जाएगा। एमबीबीएस की कक्षाएं शुरू होने के बाद मेडिकल कालेज परिसर अब गुलजार हो गया है। जनपद को बेहतर चिकित्सकीय सुविधाओं से लैस करने लिए शासन द्वारा नगर के आइटीआइ मैदान में मेडिकल कालेज स्थापित कराया गया है। यहां विभिनन विभागों के प्रोफेसरों के अलावा जूनियर चिकित्सकों की तैनाती भी हो चुकी है। कालेज में 100 सीट हैं, जिस पर बच्चों का दाखिला चल रहा है। इसमें से 85 सीटें राज्य और 15 सीटें केंद्र स्तर से भरी जाएंगी। काउंसिलिग प्रक्रिया पूरी होने के बाद मेडिकल कालेज प्रशासन द्वारा 16 सदस्यों की एक टीम का गठन कर मेडिकल बोर्ड बनाया है, जो प्रवेश लेने आए बच्चों का जहां मेडिकल चेकअप करने के साथ उनके कागजी कार्रवाई को पूरा करने में सहयोग कर रहे हैं। अब तक 84 सीटों पर प्रवेश पहले राउंड में ही हो चुका है। शेष 16 सीटों पर दूसरे राउंड में प्रवेश होगा। कालेज में एंटी रैगिग टीम गठित मेडिकल कालेज में आठ सदस्यीय एंटी रैगिग कमेटी भी गठित कर दी गई है, ताकि छात्र-छात्राओं को सहूलियत रहे। कालेज में एंटी रैगिग टीम सक्रिय हो गई है।एंटी रैगिग कमेटी नियमित सुबह से ही पूरे दिन परिसर में सक्रिय रह रही है। वह पूरी रिपोर्ट

प्रधानाचार्य डा. आनंद मिश्रा के दे रही है। हालांकि पहले वर्ष छात्रों की रैंगिग कम ही होने की संभावना है, क्यों कि सभी छात्र एक ही बैच के हैं। रैगिग अधिकतर ऊपर के बैच वाले छात्र जूनियर छात्रों का करते हैं। : राजकीय मेडिकल कालेज में कक्षाएं शुरू हो गई है। अभी फाउंडेशन कक्षाएं चल रही हैं। इसमें पढ़ाए जाने वाले कोर्स, विषय और पुस्तकों आदि के बारे में जानकारी देकर नींव तैयार की जा रही है। इसके बाद कोर्स शुरू होगा। छात्रों को अनुशासन, ईमानदारी व समयबद्धता के साथ मेहनत से पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

रोजगार से महिलाओं की तस्वीर संग बदली तकदीर

जौनपुर । कभी घर की चारदीवारी में कैद रहने वाली महिलाएं आज समूहों से जुड़कर न सिर्फ आत्मनिर्भरता की गाथा बुन रही हैं, बल्कि समाज में मान के साथ ही घर में सम्मान भी पा रही हैं। कभी दूसरों पर आश्रित रहने वाली आधा आबादी आज खुद के पैरों पर खड़ी होकर हौसले को ताकत देने के साथ ही अन्य से भी कदमताल करने को प्रेरित कर रही है। सभी नौ विधानसभाओं में 10,126 समूहों से जुड़कर एक लाख 12 हजार महिलाएं किसी न किसी कार्य से जीविकोपार्जन करने के साथ ही अपने दम पर गृहस्थी की गाड़ी खींच रही हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने की इस कड़ी में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएल) की ओर से भी सार्थक प्रयास किए गए हैं। यहां कुल नौ विधानसभाएं हैं, जिसमें महिलाओं की कुल आबादी 22,73,739 है। समूह के गठन पर जोर सभी विधानसभाओं में दिया गया। बदलापुर, मड़ियाहूं, जफराबाद, मल्हनी, मछलीशहर, केराकत, शाहगंज में विभिनन समूहों से 11 से 12 हजार महिलाएं जुड़ी हैं। हालांकि जौनपुर विधानसभा में यह आंकड़ा अन्य की अपेक्षा कुछ कम है। समूहों के माध्यम से कोई धूपबत्ती व अगरबत्ती बनाकर

अपनी आजीविका चला रहा है तो कोई बीसी सखी के अलावा सामुदायिक शौचालयों का संचालन व अचार-मुरब्बा बनाकर अपनी सहभागिता निभा रहा है। गांवों की महिलाओं को मजबूती देने के लिहाज से ही सभी 21 ब्लाकों में प्राथमिकता के आधार पर समूहों का गठन किया गया है, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं जुड़ी हैं। सिरकोनी ब्लाक की परियावां (लौकरी) गांव निवासी सन्नो सिंह ने गांव की महिलाओं को मजबूती देने के लिए दो वर्ष पहले आशा आजीविका महिला स्वयं सहायता समूह का गठन किया। उन्होंने समूह में 11 ऐसी महिलाओं को जोड़ा जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। आज वह सभी के साथ मिलकर अचार बनाकर 30 से 40 हजार रुपये महीना कमा रही हैं। अचार की पैकिग के लिए बकायदा यूनिट लगाई हैं। इसके साथ ही घर के बने इस अचार को आशा नाम दिया गया है। इसे बनाने में खर्च को काटकर 10 से 15 हजार रुपये बचा लेती हैं।

महासमर फोटो 05- मतदान कार्मिकों को मिला डयूटी कार्ड, होगा प्रशिक्षण

चंदौला। विधानसभा चुनाव को सकुशल संपन्न कराने के लिए प्रशासन की ओर से तैयारी को अमलीजामा पहनाया जा रहा है। इसके मद्देनजर रविवार को विकास भवन सभागार में मुख्य विकास अधिकारी अजितेंद्र नारायण ने मतदान कार्मिकों को डयूटी कार्ड का वितरण किया। कहा कि कार्मिक द्वितीय चरण के प्रशिक्षण के लिए तैयार रहे हैं। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही पर कार्रवाई की जाएगी। कहा कि कार्मिक अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहें ताकि चुनाव को सकुशल संपनन कराया जा सके। जनपद में सातवें व अंतिम चरण में सात मार्च को मतदान होगा। इसके लिए 8231 मतदान कार्मिकों की ड्यूटी लगाई गई है। कार्मिकों के पहले चरण का प्रशिक्षण पूरा हो चुका है। दूसरे चरण के प्रशिक्षण की तैयारी प्रशासन की ओर से की जा रही है। इसके लिए ड्यूटी का वितरण किया जा रहा है। विकास भवन से कार्मिकों को ड्यूटी पत्र दिया गया। सीडीओ ने कहा कि निर्वाचन ड्यूटी से भागने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी।

रंगोली बना छात्रों ने लोगों को मतदान के लिए किया प्रेरित

मीरजापुर । विधानसभा चुनाव में शत-प्रतिशत मतदान के लिए शनिवार को प्रशासन संग छात्र-छात्राओं ने अनूठी पहल की। छात्र-छात्राओं ने फूलों की रंगोली बनाकर

लोगों को चुनाव में मतदान के लिए प्रेरित किया। विभिन्न स्कूलों के 95 छात्र-छात्राओं के द्वारा फूलों आकर्षक रंगोली बनाई गई। महुवरिया स्थित बीएलजे मैदान में मतदाता जागरूकता आधारित रंगोली को देखने के लिए लोग उमड़े। छात्र-छात्राओं के साथ सारे काम छोड़ दो सबसे पहले वोट दो का नारा लगाकर उपस्थित जन समुदाय को मतदान करने की अपील की। मंडलायुक्त योगेश्वर राम मिश्र, जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार ने रंगोली का निरीक्षण कर सराहा। सीडीओ व प्रभारी अधिकारी स्वीप श्रीलक्ष्मी वीएस की देखरेख में नगर के बीएलजे इंटर कालेज परिसर में 50-50 वर्ग फीट में फूलों की रंगोली बनाई गईं। नगर के आर्य कन्या इंटर कालेज, सुंदर मुंदर इंटर कालेज, स्व. काशीराम इंटर कालेज की बालिकाओं तथा माता प्रसाद माता भीख इंटर कालेज, शिव इंटर कालेज, राजस्थान कालेज के स्काउट गाइड के कुल 95 छात्र-छात्रों एवं 08 कला शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। जिला उद्यान अधिकारी मेवा राम के नेतृत्व में बीएलजे इंटर कालेज के प्रवक्ता अनिल राव, जनता जनार्दन इंटर कालेज भुड़कुडा के जेपी कुरील एवं संतोष कुमार सिंह ने तैयार की। प्रधानाचार्य जीआइसी राज कुमार दीक्षित, महेंद्र सोनकर, अनीता यादव, सुनीता पांडेय, डा. प्रमोद शंकर सिंह, डा. संतोष कुमार सिंह, रीता वर्मा रहे।

सोनभद्र में डिजिटल चुनाव से अछूती रहेगी दो लाख आबादी

सोनभद्र। विधानसभा चुनाव 2022 में सोनभद्र की दो लाख से अधिक की आबादी डिजिटल चुनाव से अछूती रहेगी। जिले के 69 गांव ऐसे हैं, जहां मोबाइल नेटवर्क की कोई व्यवस्था नही है। मोबाइल नेटवर्क न होने से इन गांवों में एंड्रॉयड फोन भी कम नजर आते हैं। देश के चार राज्यों की सीमाओं से घिरे जनपद सोनभद्र में कुल चार विधानसभा है। पूरे जिले की आबादी लगभग 20 लाख है। इसमें लगभग 13 लाख 59 हजार मतदाता है। इस बार विधानसभा चुनाव में कोरोना के कारण जनसभाओं पर रोक लगा दी गयी है। ऐसे में इस बार का चुनाव पूरी तरह डिजिटल हो गया है। राजनीतिक दलों के प्रत्याशी इंटरनेट मीडिया पर प्रचार प्रसार में जुटे हुए है। ऐसे में सोनभद्र के दो लाख से अधिक मतदाता इस बार इस डिजिटल चुनाव से अछूते हो गए हैं क्योंकि मोबाइल नेटवर्क न होने के कारण उन्हें चुनाव को लेकर जानकारी भी नही मिल पा रही है। नेटवर्क न होने के कारण वे इंटरनेट मीडिया से भी दूर हैं। बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश की सीमा से सटे जनपद सोनभद्र के सीमावर्ती गांव जंगलों व पहाड़ों से आच्छादित है। इसमें मध्यप्रदेश की सीमा से सटे ओबरा विधानसभा क्षेत्र के कन्हरा, निगा, परासपानी, फफराकुंड, करौं, जुगैल, चंचलिया आदि गांव शामिल है। वही झारखंड व छत्तीसगढ़ सीमा से सटे दुद्धी विधानसभा क्षेत्र के बरखोरहा, कुदरी, कासीवाखड, बोधाडीह, बासिन, घिचोरवा, करहिया, गुलरिया, भक्तिनिया, औरादंडी आदि गांवों में मोबाइल नेटवर्क नही है। राबर्ट्सगंज विधानसभा क्षेत्र के नगवां ब्लाक व घोरावल विधानसभा क्षेत्र के मध्य प्रदेश की सीमा से सटे कुछ गांवों का भी यही हाल है। ऐसे में जिले की चारों विधानसभा क्षेत्र के प्रत्याशियों को इस बार मतदाताओं तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत भी करनी पड़ रही है।

एटीएम कार्ड बदलकर निकाले 26 हजार

जिगना (मीरजापुर)। क्षेत्र के बिहसडा बाजार स्थित एटीएम से एटीएम कार्ड बदल कर ठग ने 26 हजार दो सौ रुपये शनिवार को निकाल लिया। भुक्तभोगी ने घटना की जानकारी पुलिस व बैंक शाखा को देकर कार्रवाई की मांग की। क्षेत्र के बघेडाकला गांव निवासी श्रीनाथ तिवारी शनिवार को बिहसड़ा बाजार स्थित इंडिया एटीएम से रुपये निकालने गए थे। चार हजार निकालने के बाद एक हजार रुपये और निकालने के लिए कार्ड डाला कि बगल खड़े युवक ने कहा कि आप बाद में रुपये निकालना हमे देर हो रही है। हजार दो सौ रुपये निकाल लिया।

चोरी की घटना का राजफाश करने के करीब पहुंची पुलिस

मीरजापुर। शहर कोतवाली के वासलीगंज लक्ष्मण प्रसाद गली मोहल्ले में गत दिनों हुई गल्ला व्यवसायी के घर में चोरी की घटना का पुलिस राजफाश करने के करीब पहुंच गई है। इस मामले में पुलिस ने पूछताछ के लिए दो लोगों को उठाया है। बताया जा रहा है कि पूछताछ की प्रक्रिया लगभग पूर्ण हो चुकी हैं, केवल चोरी हुए सामान बरामद करने हैं। उसके बरामद होते ही घटना को खोल दिया जाएगा। एक सप्ताह पूर्व गल्ला व्यवसायी अनिल कुमार गुप्ता को दिल का दौरा पड़ा था। स्वजन उनका इलाज कराने के लिए मुंबई ले गए थे। घर पर उनके कोई नहीं था। इसी का फायदा उठाकर चोर उनके घर के छत के रास्ते सीढ़ी के दरवाजे का ताला तोड़कर अंदर घुस गए। आलमारी में रखे 50 हजार नकदी व करीब दस लाख रुपये के जेवर समेत अन्य सामान उठा ले गए थे। सुबह पड़ोसियों ने छत पर सामान बिखरा देखा तो इसकी सूचना स्वजनों को दी थी। उनका बेटा पहुंचा और कमरे में गया तो सारा सामान गायब था। यह देख उन्होंने घटना की सूचना पुलिस को दी थी। पुलिस मामले की छानबीन में जुटी। छानबीन करते हुए पुलिस ने इस मामले में दो लोगों को पूछताछ के लिए उठाया है। पूछताछ के दौरान पुलिस को काफी अहम सुराग मिले। पुलिस दावा कर रही हैं कि जल्द ही घटना का पर्दाफाश कर दिया जाएगा। बताया गया कि चोरी हुए सामानों की बरामद करने में पुलिस लगी हुई है। उनके बरामद होते ही घटना का पर्दाफाश कर दिया जाएगा।

मुंबई से मासूम संग पति के घर धमकी विवाहिता, बैठी धरने पर

जिगना (मीरजापुर) । पति की तलाश में विवाहिता मंबई से अपने एक साल के बच्चे के साथ बिहसड़ा कला पहुंची तो परिवार के अधिकतर सदस्य गायब मिले। घर पर मौजूद

पति की बहन ने अंदर नहीं जाने नहीं दिया तो वह घर के बाहर बच्चे के साथ धरने पर बैठ गई। इसके पूर्व पीड़िता ने जिगना पुलिस से मदद की गुहार लगाई, लेकिन मामला महाराष्ट्र का बताकर पुलिस ने भी अपना पल्ला झाड़ लिया। महाराष्ट्र प्रांत के मुंबई के बोरीबली बेस्ट निवासी पीड़िता करिश्मा वर्मा (27) का दावा है कि उसकी शादी तीन वर्ष पूर्व बिहसड़ा कला गांव के धरकार बस्ती निवासी कृष्णा वर्मा के साथ हुई थी। दोनों का एक वर्ष का बेटा है। पति दो माह पूर्व भागकर गांव चला आया था, तब से उससे बात नहीं हो पा रही थी। उसने अपना मोबाइल नंबर भी बंद कर दिया था, अंततः निराश होकर पति के पते पर बिहसडा कला गांव आने का निर्णय लिया। यहां स्टेशन पर पहुंचने के बाद उसने आटो किया और जिगना थाने पहुंची। उसने लिखित तहरीर दी, लेकिन पुलिस ने यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि मामला महाराष्ट्र मुंबई का है। इसके बाद वह देर शाम पति के घर पहुंची तो पति, ससुर एवं देवर सब घर से भाग खड़े हुए। जिवदानी देवी मंदिर में की थी शादी - विवाहिता ने बताया कि कृष्णा वर्मा बोरीबली बेस्ट मुंबई में एक प्राइवेट कंपनी में सिक्यूरिटी गार्ड का काम करते थे। इसी बीच उन दोनों को प्यार हो गया और दोनों ने जिवदानी देवी मंदिर में शादी कर ली थी। देर शाम तक घर के बाहर बैठी विवाहिता ने कहा कि मैं पति के आने तक यहीं बैठी रहूंगी। मामला महाराष्ट्र मुंबई का होने के कारण पीड़ित महिला को वहीं पर तहरीर देने के लिए कहा गया है।

उन्नत कृषि यंत्रों ने बदल दी विंध्य क्षेत्र के किसानों की किस्मत

मीरजापुर । उनन्त कृषि यंत्रों ने विंध्य क्षेत्र के किसानों की किस्मत बदल दी है। इन कृषि यंत्रों की बदौलत जनपद के किसानों की आय में निरंतर वृद्धि हो रही है। अब तक 1832 किसानों को कृषि यंत्र तो प्रमोशन आफ एग्रीकल्चर मैकनाइजेशन इन सीटू सोलर पंप योजना के तहत 424 सोलर पंप का वितरण किया गया है, इससे किसानों की सिचाई समस्या का काफी हद तक समाधान हो सका है। किसानों की उपज बढ़ाकर आय दोगुनी करने संग जल संरक्षण में भी ड्रम सीडर मुफीद बन रहा है। ड्रम सीडर के माध्यम से विंध्य क्षेत्र के किसान जल संरक्षित कर रहे हैं। सिटी ब्लाक के खुटहा मानस के किसान बृजेश सिंह ड्रम सीडर से धान की बुवाई कर अन्य के लिए प्रेरणा बन रहे है। जिले में 272776 किसान हैं, जिनमें से 348513 किसान अनुदान से लाभांवित हो रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी किसानों की आय दोगुनी करने को गंभीर है। ऐसे में किसानों की आय तभी दोगुनी होगी जब उपज बढ़ें। इसके लिए शासन-प्रशासन दिन रात कवायद में जुटा है। उप निदेशक डा. अशोक उपाध्याय ने बताया कि ड्रम सीडर से धान की सीधी बुआई की जा सकती है। काफी सस्ती और आसान तकनीकी वाली मशीन में बीज भरने के लिए चार प्लास्टिक के खोखले ड्रम होते हैं, जो कि एक बेलन पर बंधे रहते हैं। लगभग 60 सेंटीमीटर बेलन व्यास के दोनो किनारे पर पहिए लगे रहते है। ड्रम में दो पंक्तियों पर लगभग 8-9 मिलीमीटर व्यास के छिद्र से बीज गिरते है। प्रति बीघा सात किग्रा धान बीज का किसान ने बुवाई की। मशीन से बुवाई करने पर मजदूरी की काफी बचत हो जाती है। ड्रम सीडर द्वारा एक बीघे की बुवाई करने पर दो मजदूर लगते हैं, जिनकी मजदूरी लगभग 600 होती है। रोपाई विधि से करने पर एक बीघे में 10 मजदूर लगते है, जिनकी मजदूरी लगभग 3000 रुपये होता है। किसान को एक बीघे में 2400 रुपये मजदूरी में बचत हो तथा उत्पादन भी रोपाई विधि के लगभग बराबर ही होता है। एक नजर जिले में कुल किसानों की संख्या 272776 अनुदान से लाभान्वित किसान 348513 कुल कृषि यंत्रों की संख्या 1832 प्रमोशन आफ एग्रीकल्चर मैकनाइजेशन इन सीटू सोलर पंप 424

दैवी आपदा में लापरवाही पर लेखपालों को प्रतिकूल प्रविष्टि

मड़िहान (मीरजापुर) । तहसील क्षेत्र में दैवीय आपदा में लापरवाही बरतने के मामले में तहसीलदार नुपूर सिंह ने दो लेखपालों प्रतिकूल प्रविष्टि दी है। पटेहरा खुर्द गांव के लेखपाल विनय दुबे द्वारा दैवीय आपदा में इस कदर लापरवाही बरती गई कि पशु मृत्यु के दस दिन बाद घटना की सूचना अधिकारियों के निर्देश के बाद भी तहसील में दिया गया। गांव निवासी उमाशंकर पांडेय की मवेशी सात जनवरी को मर गई थी, लेकिन लेखपाल को घटना की जानकारी काफी दिनों बाद हुई। इसी तरह अमोई पुरवा गांव में सर्पदंश से दुर्गा देवी की मौत हो गई थी, लेकिन लेखपाल को भनक तक नहीं लगी। दस दिन बाद मानव मृत की रिपोर्ट तहसीलदार कार्यालय में प्रस्तुत किया। इस पर नाराजगी जताते हुए अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ला द्वारा दोनों लेखपालों पर प्रतिकूल प्रविष्टि जारी करने का निर्देश दिया गया। तहसीलदार ने लेखपाल आशाराम व विनय दुबे के खिलाफ कार्रवाई की। इस संबंध में तहसीलदार ने बताया कि 24 घंटे के अंदर मानव मृत्यु या पशु मृत्यु की सूचना तहसील कार्यालय में देना अनिवार्य है। इसमें लापरवाही बरतने के आरोप में दोनों लेखपाल के खिलाफ कार्रवाई की गई है।

निर्धारित प्रारूप पर ही व्यय का विवरण दें प्रत्याशी : प्रेक्षक

मीरजापुर। विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 निष्पक्ष, पारदर्शी व शांतिपूर्ण संपन्न कराने के लिए निर्वाचन आयोग के व्यय प्रेक्षक प्रदीप कुमार विश्वास एवं प्रशांत कुमार ने जिला पंचायत

सभागार में उम्मीदवारों एवं पदाधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में निर्वाचन में व्यय विवरण के बारे में जानकारी दी। उन्होने कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुसार ही आय-व्यय का विवरण, निर्धारित प्रारूप पर भरकर उपलब्ध कराएं। ताकि निष्पक्ष चुनाव एवं पारदर्शी चुनाव संपन्न कराया जा सके। व्यय प्रेक्षक ने निर्वाचन व्यय रजिस्टर भरने एवं उसके नियमों के बारे में भी जानकारी दी। बताया कि व्यय विवरण के लिए जिस प्रारूप पर भरकर देना है। यह भी बताया कि परिणाम की घोषणा के बाद अनुसूची भाग 1, 2, 3 एवं 4 भरकर देना होगा। प्रत्याशी एवं राजनैतिक दलों के द्वारा भरे जाने वाले प्रारूपों के बारे में बताया। सभी व्यय का परीक्षण निर्धारित 03 तिथियों में भी कराना भी सुनिश्चित करें। अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ल, मुख्य कोषाधिकारी राज कुमार गुप्ता, डिप्टी कलेक्टर अश्वनी कुमार सिंह, छोटे खान कांग्रेस, आदि रहे। सामान्य प्रेक्षक ने की निर्वाचन व्यवस्थाओं की समीक्षा

वाहनों की तलाशी, संदिग्धों से पूछताछ

सोनभद्र। विधानसभा चुनाव को लेकर पुलिस वाहनों की जांच कर रही है। संदिग्धों की तलाशी ली जा रही है और पैदल मार्च कर लोगों से निष्पक्ष व शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव संपन्न कराने की अपील कर रही है। शनिवार को जिले के विभिन्न थानों की पुलिस ने वाहनों की जांच की। बभनी में प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार सिंह ने संदिग्ध व्यक्तियों की जांच की। वाहनों को रोककर तलाशी ली। कार की डिग्गी खोलवाकर देखा गया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि छत्तीसगढ़ सीमा से सटे आसनडीह समेत अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में वाहनों की जांच की जा रही है। संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है।

श्रेया ने विनिता को 11-9 व 11-6 से किया पराजित

मीरजापुर। स्पोर्टस स्टेडियम भिस्कुरी में मतदाता जागरूकता के लिए जिला स्तरीय ओपेन पुरुष व महिला टेबल टेनिस प्रतियोगिता शनिवार को आयोजित की गई। आयुक्त योगेश्वरराम मिश्रा ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए उत्साहवर्धन किया। बालिका वर्ग का फाइनल मैच विनिता साहनी और श्रेया द्विवेदी के बीच खेला गया। इसमें श्रेया द्विवेदी ने विनिता साहनी को 11-9 और 11-6 से पराजित कर मैच जीता। प्रतियोगिता के माध्यम से प्रशासन और खेल विभाग लोगों को अधिक से अधिक मतदान के लिए प्रेरित कर रहा है। बालिका वर्ग में पहला सेमी फाइनल विनिता साहनी और अनुष्का के बीच हुआ, इसमें विनिता साहनी 11-9, 11-7 से विजयी होकर फाइनल में प्रवेश किया। दूसरा सेमी फाइनल श्रेया द्विवेदी और मुस्कान के बीच हुआ। श्रेया द्विवेदी ने 11-5 और 11-7 से विजयी होकर फाइनल में प्रवेश किया। तीसरे स्थान के लिए अनुष्का मिश्रा और मुस्कान के बीच मैच खेला गया। जिसमें अनुष्का मिश्रा ने 11-4 और 11-6 से मैच जीतकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। क्रीड़ा अधिकारी भानु प्रसाद ने बताया कि बालक वर्ग में पहला सेमी फाइनल बालकृष्ण यादव और सक्षम बरनवाल के बीच खेला गया। सक्षम बरनवाल ने 11-9 व 12-10 से मैच जीता। दूसरा सेमी फाइनल प्रज्ञान बरनवाल और हर्षित श्रीवास्तव के बीच खेला गया। इसमें 11-7 और 11-6 से मैच जीता। फाइनल मैच सक्षम बरनवाल और प्रज्ञान बरनवाल के बीच खेला गया। सक्षम बरनवाल ने 13-11, 6-11 और 11-9 से मैच जीता। प्रतियोगिता में 21 बालक और आठ बालिकाओं ने प्रतिभाग किया।

महावीरी झंडा महोत्सव की तैयारी शुरू

अनपरा (सोनभद्र) । महावीरी शोभायात्रा समिति की बैठक रविवार को दुर्गा मंदिर सोनारी गली में हुई। इस दौरान झंडा महोत्सव मनाए जाने की तिथि निर्धारित की गई। अध्यक्ष गोपाल दास गुप्ता ने बताया कि बैठक में महावीरी झंडा महोत्सव 29 मार्च को मनाए जाने का निर्णय लिया गया। बैठक में सोनी, पिटू वर्मा, राजेश गोयल, मंतोष तिवारी, राजेश गुप्ता, नवीन पांडेय, सुनील पटवा, राज कुमार आदि उपस्थित रहें।

शिविर में 22 लोगों ने किया रक्तदान

सोनभद्र। रविवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जहां 22 लोगों ने रक्त दान कर पीड़ित समाज की सेवा का संकल्प लिया। पंचशील हास्पिटल के निदेशक पवित मौर्या अपने सहयोगियों के साथ साईं हॉस्पिटल ब्लड सेंटर में निश्शुल्क रक्तदान किया। इसी क्रम में प्रमोद कुमार, सोनू शर्मा, वीर बहादुर सिंह, राजू मौर्या, धर्मेंद्र कुमार, ललुन सिंह समेत 22 लोगों ने निशुल्क रक्तदान किए। साईं हास्पिटल ब्लड सेंटर की डायरेक्टर डा. अनुपमा सिंह ने कहा कि आप लोगों के दिए ब्लड से ही मरीजों की जान बचाई जाती है। रक्तदान शिविर में रवि कुमार, सौल्या मौर्या, राजन सोनी, आशुतोष मिश्रा, अखिलेश मिश्रा के साथ सभी कर्मचारियों ने भाग लिया।

किसानों का अंगूठा लगवा कर कराएं फीडिग

सोनभद्र : किसानों की समस्याओं को लेकर भारतीय किसान संघ काशी प्रांत ने शनिवार को अपर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। धान तौल कराने के बाद भी अंगूठा लगवाए जाने पर नाराजगी जाहिर की। अंगूठा लगवाकर फीडिग कराने की मांग की। संघ के जिलाध्यक्ष रामबहादुर सिंह ने कहा कि किसानों के धान क्रय किए गए हैं परन्तु अभी तक अंगूठा लगवाकर फीडिग नहीं कराया गया है। यही नहीं कुछ ऐसे भी केन्द्र हैं जहां किसान अभी भी पोर्टल खुलने का इंतजार कर रहे हैं। क्रय केन्द्र करमा, केकराही, गयारतवल पर किसानों के धान का अभी तक क्रय नहीं कराया गया। पीसीएफ केन्द्र करमा, पापी, फुलवारी, खैरपुर, केकराही में कुछ किसानों का धान तौल कर लिया गया लेकिन उनका अभी तक अंगूठा लगवाकर फीडिग नहीं कराया गया। इतना ही नहीं पीसीएफ के केन्द्रों पर विक्रय हो चुके धान का अभी तक भुगतान बाकी है जबकि धान महीने पहले बिका है। अपर जिलाधिकारी से मांग की कि किसानों का अंगूठा लगवाकर फीडिग कराया जाए तथा उनकी सभी समस्याओं का शीघ्र समाधान कराया जाए। इस मौके पर प्रभुपाल सिंह मौर्य, रामजी सिंह, रणजीत सिंह, सदानंद, हीरालाल, दयाराम मौर्य आदि मौजूद रहे।

थाना घोरावल पुलिस द्वारा गैंगेस्टर एक्ट में वांछित अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
चिन्ता पान्डेय

सोनभद्र । पुलिस उप महानिरीक्षक/ पुलिस अधीक्षक

सोनभद्र श्री अमरेन्द्र प्रसाद सिंह के कुशल निर्देशन में जनपद में गैंगेस्टर एक्ट के वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना घोरावल पुलिस द्वारा थाना शाहगंज पर पंजीकृत मु0अ0सं0-75/2021 धारा 3(1) 30प्र0 गिरोहबंद एवं समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियम में वांछित अभियुक्त प्रमोद यादव पुत्र कमला यादव निवासी सोनवरसा सरईगढ़ थाना रायपुर जनपद सोनभद्र को रा0गंज धर्मशाला चौराहा के पास से गिरफ्तार कर मा0 न्यायालय भेजा गया । नाम पता अभियुक्त 1- प्रमोद यादव पुत्र कमला यादव निवासी सोनवरसा सरईगढ़ थाना रायपुर जनपद सोनभद्र गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीमः- 1- नि0 देवतानन्द सिंह प्रभारी निरीक्षक थाना घोरावल सोनभद्र । 2- हे0का0 श्रीकान्त राय थाना घोरावल सोनभद्र । 3- हे0का0 ओमप्रकाश यादव थाना घोरावल सोनभद्र । 4- म0का0 दीपा पासवान थाना घोरावल सोनभद्र ।

चारों विधानसभा सीटों पर बनेंगे आठ आदर्श, चार सखी बूथ

सोनभद्र। महिलाओं का मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए निर्वाचन विभाग लगातार प्रयास कर रहा है। एक तरफ जहां जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ विशेष

बूथ भी बनाए जा रहें हैं। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक-एक सखी बूथ बनाए जाएंगे जबकि दो-दो आदर्श बूथ बनाए जाएंगे। इसके लिए बूथों का चिह्नीकरण कर लिया गया है। विधानसभा चुनाव को लेकर तैयारियां जोरों पर है। जिला निर्वाचन अधिकारी टीके शिबू के निर्देश पर बूथों पर पूरी व्यवस्था की जा रही है। रैंप से लेकर शौचालय व पानी तक की व्यवस्था हो रही है। इसकी मानिटरिंग भी तहसील प्रशासन के अलावा विभिन्न विभागों के अधिकारी कर रहे है। जिला निर्वाचन अधिकारी शिबू ने बताया कि इस बार मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए आदर्श बूथ व सखी बूथ के लिए स्थानों का चिह्नीकरण कर लिया गया है। घोरावल विधानसभा क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय बिसरेखी व पूर्व माध्यमिक विद्यालय केकराही को आदर्श बूथ के लिए चिह्नित किया गया है जबकि प्राथमिक विद्यालय घोरावल गनी खां चक को सखी बूथ के लिए चिह्नित किया गया है। इसी तरह राबर्ट्सगंज विधानसभा क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद प्रेक्षागृह व राजा शारदा महेश इंटर कालेज राबर्ट्सगंज को आदर्श बूथ व प्राथमिक विद्यालय सजौर को सखी बूथ के लिए चिह्नित किया गया। दुद्धी विधानसभा क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय दुद्धी व बीड़र को आदर्श व उच्च प्राथमिक विद्यालय बीड़र सखी बूथ के लिए चिह्नित किए गए हैं। ओबरा विधानसभा क्षेत्र में सेंट्रल स्कूल चोपन व राजकीय इंटर कालेज पिपरी को आदर्श व शिशु शिक्षा निकेतन मांटेसरी स्कूल ओबरा को सखी मतदान केंद्र के लिए चयनित किया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि इस बार के चुनाव में मतदान प्रतिशत पिछली बार की तुलना में बढ़ाने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। सखी मतदान केंद्र पर सिर्फ महिला कर्मचारी तैनात होंगी, इससे मतदान करने आने वाली महिलाओं को प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

बसों की संख्या कम होने से यात्री संकट में

अनपरा (सोनभद्र) । विधानसभा चुनाव के मद्देनजर ज्यादातर रोडवेज बसें चुनाव ड्यूटी में चले जाने से ऊर्जांचल में आवागमन को लेकर यात्रियों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। उन्हें गमनागमन में भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। लोग विवश होकर 200 किमी वाराणसी की दूरी आठ घंटे खड़े होकर तय

कर रहें है। ऊर्जांचल में ट्रेन की कोई सुविधा न होने से लोग रोडवेज बस से ही यात्रा करते है। परिक्षेत्र में सभी प्रांतो के लोग निवास करते है। लगन के मौसम में बसों का संचालन कम होने से यात्रियों को काफी परेशानी हो रही है।ज्यादातर बसें जर्जर अवस्था में हैं, जो आए दिन बीच रास्ते में ही खराब होकर खड़ी हो जाती है। इस क्षेत्र में यात्रियों की भारी संख्या होने के बावजूद परिवहन विभाग कोई विशेष सुविधा मुहैया कराए जाने के बजाय जर्जर बसों का संचालन कर रहा है। जनपद से परिवहन विभाग को काफी राजस्व भी हासिल होता है। काशीमोड़, औड़ी, अनपरा बाजार, रेणुसागर मोड, ककरी, बीना, खड़िया, शक्तिनगर स्टैंड पर अक्सर सवारी बसों का इंतजार करते नजर आ रहे हैं।

सिंदूरदान के पूर्व दूल्हे को आई मिर्गी,कन्या का शादी से इंकार

दुद्धी (सोनभद्र)। शनिवार की भोर में सिंदूरदान की रस्म के पूर्व ही दूल्हे को मिर्गी आ गई। फिर दुल्हन ने शादी से इनकार कर दिया। वर-वधू पक्ष में विवाद के बीच कन्या पक्ष ने वर पक्ष के लोगों को बंधक बना लिया। यह घटना कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में हुई जहां हंसी खुशी के बीच चल रही शादी की रस्म विवाद में तब्दील हो गई। दोनों पक्षों में टकराव के बीच वर पक्ष ने कन्या पक्ष के सभी खर्चो को वहन करने की सहमति दी।

होने वाली है 500 अरब रुपये की कमाई, बड़ी-बड़ी टीमें रेस में

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) के सचिव जय शाह ने कहा कि इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) के मीडिया अधिकार की राशि लीग के विकास पर असर डालेगी। खासकर दो नई

टीमों के आने से आइपीएल के डिजिटल विकास में भी मदद मिलेगी। आइपीएल 2022 में लखनऊ सुपरजाइंट्स और गुजरात टाइटंस दो नई टीमें खेलेंगी। शाह ने कहा कि आइपीएल के आकांक्षी मूल्य ने सभी की अपेक्षाओं को पार कर लिया है। उन्होंने किसी भी राशि पर चर्चा करने से इन्कार किया, लेकिन कहा कि जो भी राशि होगी वह लीग के विकास पर असर डालेगी। शाह ने कहा कि बीसीसीआइ आगामी सप्ताह की शुरुआत में 2023-27 चक्र के लिए लीग के मीडिया अधिकारों के लिए निविदाएं जारी करेगा और दो महीने में ई-नीलामी पूरी करेगा। उम्मीद है कि इससे 500 अरब रुपये मिलेंगे। उन्होंने कहा कि बोर्ड ने विभिन्न प्रस्तावों का अध्ययन किया है और साथ ही अलग टीवी और डिजिटल बोलियों पर भी विचार किया जाएगा। इसका मतलब है कि अमेजन डाट काम इंक और रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, सोनी गरुप कार्प और वाल्ट डिजने कंपनी से टीवी और डिजिटल ब्राडकास्ट के अधिकार को लेकर मुकाबला करेंगे। अधिकार के लिए रिकार्ड राशि 500 अरब रुपये तक जा सकती है। डिर्जन के स्वामित्व वाली स्टार इंडिया भारत में शीर्ष प्रसारणकर्ताओं में शामिल है। उसने और सोनी ने 2022 तक डिजिटल और टेलिविजन अधिकार के लिए 163.48 अरब रुपये का भुगतान किया है। शाह ने कहा, 'आइपीएल में लखनऊ और अहमदाबाद की टीमें भी शामिल हुई हैं और उनके आने से भी लीग को फायदा हुआ है। सिर्फ 14 सत्र में हमने अभूतपूर्व आंकड़े दर्ज कर लिए और हम अन्य लोकप्रिय लीगों तक पहुंच गए। हम सिर्फ टेलीविजन ही नहीं, बल्कि डिजिटल पर भी देखे जा रहे हैं।' 10 टीमों की लीग मार्च के आखिरी सप्ताह में शुरू हो सकती है।

हार्दिक पांड्या की अगुवाई वाली गुजरात टाइटंस की टीम का लोगो जारी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (ह्स्थ) की नई फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटंस ने रविवार (20 फरवरी) को अपना लोगो जारी किया। दुनिया की सबसे लोकप्रिय क्रिकेट लीग में इस साल दो नई टीमें खेलती दिखेंगी। इनमें से

टाइटंस एक टीम है। फ्रेंचाइजी ने मेटावर्स पर अपनी टीम का लोगो और जर्सी का अनावरण किया। गुजरात टाइटंस ने इस मेगा आक्शन में मोहम्मद शमी, जेसन राय और लाकी फर्ग्यूसन जैसे खिलाड़ियों को जोड़कर एक मजबूत टीम संयोजन बनाया है। टीम में राहुल तेवतिया, विजय शंकर, डेविड मिलर, रिद्धिमान साहा भी शामिल हैं। इसके अलावा टीम ने ड्राफ्ट पिक से हार्दिक पांड्या, राशिद खान और शुभमन गिल को चुना। हार्दिक को टीम का कप्तान बनाया गया है। टाइटंस ने शनिवार को घोषणा की कि उन्होंने द टाइटंस डगआउट नाम के मेटावर्स में एक वर्चुअल स्पेस बनाया है। वे मेटावर्स में लोगो लांच करने वाली भारत की पहली स्पोर्ट्स टीम बन गई है। फ्रेंचाइजी ने सोशल मीडिया पर एक एनीमेटेड वीडियो शेयर की। इसमें कप्तान हार्दिक पांड्या, कोच आशीष नेहरा और युवा सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल को वर्चुअल तरीके से नए अंदाज में दिखाया गया। इन तीनों ने मिलकर ही टीम का लोगो जारी किया।

कोच राहुल द्रविड़ ने विवाद पर तोड़ी चुप्पी, बताया रिद्धिमान साहा से हुई सारी बातें

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज रिद्धिमान साहा को श्रीलंका के खिलाफ खेली जाने वाली टेस्ट टीम के बाहर रखा गया है। टीम चयन के ठीक बाद साहा का एक इंटरव्यू सामने आया जिसमें उन्होंने टीम इंडिया के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ पर संन्यास लेने की सलाह देने का आरोप लगाया। वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 सीरीज के आखिरी मुकाबले के बाद द्रविड़ ने इस बारे में जवाब दिया। मैं इस बात को बिल्कुल भी चोट नहीं पहुंची है। उनकी उपलब्धि और भारतीय क्रिकेट में किए गए योगदान के लिए मेरे अंदर उनके लिए काफी ज्यादा सम्मान है। मेरी उनके साथ की गई बातचीज ऐसी जगह से है जहां उनको एक साफ और ईमानदार निणय्र चाहिए था। मैं नहीं चाहता था कि यह बात उनको मीडिया से सुनने को मिले आगे द्रविड़ ने कहा, ठइस तरह की जो बातचीज है वो मैं अपने खिलाडियों के साथ करता ही रहता हूं। मैं तो इसको लेकर बिल्कुल भी दुखी नहीं हूं क्योंकि मैं इस बात की उम्मीद नहीं करता कि वो मेरे हर संदेश को पसंद करें या उससे सहमत हों। इसका मतलब यह तो नहीं कि आप इस तरह की बात को टाल देंगे या ऐसी बातों करेंगे ही नहीं। यहां तक की अभी भी जब हम प्लेइंग इलेवन का चयन करते हैं तो उन सभी खिलाड़ी से

बात करते हैं जिनको नहीं चुना जाता। एक समय पर खिलाडियों का उदास होना, यह बहुत ही सामान्य की बात है। मुझे बस ऐसा लगता है कि मेरी इस टीम में हर एक चीज साफ होनी चाहिए और ईनामदारी यही वो चीज है और यही वो चीज है जिसे हम करने की कोशिश कर रहे थे। हमारे पास इस साल महज तीन ही टेस्ट मैच है और रिषभ पंत जिन्होंने अपने आप टीम में अच्छे से स्थापित कर लिया है तो अब एक और युवा विकेटकीपर निखारने की तरफ देख रहे हैं। इसकी वजह से यह नहीं है कि साहा के योगदान और उनके प्रति मेरे अंदर का सम्मान और अहसास बदल जाएंगे।

रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम इंडिया का धमाल, पूरी की क्लीन स्वीप की हैट्रिक

कोलकाता। एक और सीरीज, एक और क्लीन स्वीप। रविवार को ईडन गार्डन्स स्टेडियम में तीसरे व आखिरी टी-20 मुकाबले में भारत ने वेस्टइंडीज को 17 रनों से हराकर वनडे के बाद टी-20 सीरीज में भी उसका 3-0 से सूपड़ा साफ कर दिया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में पांच विकेट पर 184 रन बनाए, जिसके जवाब में वेस्टइंडीज इतने ओवर में नौ विकेट पर 167 रन ही बना पाई।निकोलस पूरन ने 61 रनों की एक और शानदार पारी खेलकर सीरीज में लगातार तीसरा अर्धशतक जमाया, लेकिन इस बार भी वह अपनी टीम को हार से नहीं बचा पाए। भारत ने पहले मैच में वेस्टइंडीज को छह विकेट और दूसरे में आठ रन से हराया था। बतौर फुलटाइम कप्तान रोहित शर्मा की यह तीसरी सीरीज जीत के साथ-साथ क्लीन स्वीप की हैट्रिक भी है।रोहित की कप्तानी में भारत ने सबसे पहले न्यूजीलैंड को घरेलू टी-20 सीरीज में 3-0 से हराया था, उसके बाद भारत दौरे पर आई विंडीज टीम को वनडे सीरीज में 3-0 से मात दी और अब टी-20 सीरीज में भी 3-0 से उसका सूपड़ा साफ कर दिया। यह जीत यह बयां करने को काफी है कि इसी साल आस्ट्रेलिया में होने वाले अगले टी-20 विश्व कप के लिए टीम इंडिया की तैयारी सही दिशा में चल रही हैसूर्यकुमार-वेंकटेश ने दूर की मध्यक्रम की चिंता : भारत के लिए इस टी-20 सीरीज में क्लीन स्वीप के बाद सबसे सकारात्मक पहलू मध्यक्रम में सूर्यकुमार यादव व वेंकटेश अय्यर की शानदार बल्लेबाजी रही। सूर्यकुमार व वेंकटेश

ने भारत की मध्यक्रम की बल्लेबाजी की चिंता काफी हद तक दूर कर दी है। दोनों ने इस सीरीज में जिस तरह से प्रदर्शन किया है, उससे भारत को सूर्यकुमार के रूप में उम्दा मैच फिनिशर और वेंकटेश के रूप में विशुद्ध आलराउंडर मिल गया है। आखिरी मैच में सूर्यकुमार ने 31 गेंदों पर ताबड़तोड़ 65 रन बनाए, जिसमें सात छक्के और एक चौका शामिल रहा। वहीं वेंकटेश अय्यर ने एक और शानदार कैमियो खेलते हुए नाबाद 35 रन बनाए। दोनों ऐसे वक्त बल्लेबाजी करने आए थे, जब भारतीय पारी लड़खड़ाने लगी थी। के बाद गेंदबाजी में भी जौहर दिखाते हुए दो विकेट भी चटकाए। जैसे-जैसे मिले मौके, वैसे-वैसे किए प्रयोग : इस सीरीज में टीम इंडिया के कोच राहुल द्रविड़ व कप्तान रोहित शर्मा ने जैसे-जैसे मौके मिले, वैसे-वैसे प्रयोग किए। इसमें कुछ सफल रहे तो कुछ विफल। इशान किशन को इस सीरीज में बतौर सलामी बल्लेबाज भरपूर मौका दिया गया, लेकिन वह कुछ खास नहीं कर पाए।

वनडे के बाद टी-20 में भी वेस्टइंडीज का क्लीन स्वीप, टीम इंडिया आखिरी मैच 17 रनों से जीती

नई दिल्ली। टीम इंडिया ने वेस्टइंडीज को रविवार को कोलकाता के ईडेन गार्डेंस में तीसरे और आखिरी टी-20 मैच में 17 रनों से हरा दिया। इसके साथ ही मेहमान टीम का सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप हो गया। इससे पहले वेस्टइंडीज की टीम वनडे सीरीज भी 3-0 से हारी थी। तीसरे टी- 20 में वेस्टइंडीज ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। टीम इंडिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 5 विकेट के नुकसान पर 184 रन बनाए। वेस्टइंडीज को 185 रनों का लक्ष्य दिया। जवाब में वेस्टइंडीज की टीम 20 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 167 रन ही बना सका विंडीज की शुरुआत अच्छी नहीं रही पहले ही ओवर में टीम को झटका लगा। दीपक चाहर ने काइल मेयर्स को 6 रन पर आउट कर दिया। दूसरा झटका तीसरे ओवर में लगा। शाई होप 8 रन बनाकर दीपक चाहर की गेंद पर आउट हुए। सातवें ओवर में टीम को तीसरा झटका लगा। रोवमन पावेल को 25 रन पर हर्षल पटेल ने पवेलियन भेजा। कीरोन पोलार्ड को पांच रन पर आउट करके वेंकटेश अय्यर ने चौथा झटका दिया। जेसन होल्डर को वेंकटेश अय्यर ने दो रन पर आउट करके विंडीज को पांचवां झटका दिया। 12 रन पर रस्टन चेज को आउट करके हर्षल पटेल ने विंडीज को छठा झटका दिया। निकोलस पूरन 61 रन पर आउट करके शार्दुल ठाकुर ने विंडीज को सातवां झटका दिया। रोमेरियो शेफर्ड को आउट करके हर्षल पटेल ने विंडीज को आठवां झटका दिया। डोमिनिक ड्रेक्स को चार रन पर आउट करके शार्दुल ठाकुर ने विंडीज को नौवां झटका दिया। फैबियन एलन पांच और हेडन वाल्श 0 रन पर नाबाद रहे ईशान किशन और रितुराज गायकवाड़ की जोड़ी ओपनिंग करने उतरी। टीम इंडिया को पहला झटका तीसरे ओवर में लगा। जेसन होल्डर ने गायकवाड़ को 4 रन पर पवेलियन भेजा। टीम इंडिया को दूसरा झटका 9वें ओवर में लगा। हेडन वाल्श (जूनियर) ने उन्हें 25 रन पर आउट किया। 10 वें ओवर में टीम को तीसरा झटका रस्टन चेज ने दिया। ईशान किशन 34 रन बनाकर आउट हुए। रोहित शर्मा के तौर पर चौथे झटका लगा। वह 7 रन बनाकर डोमिनिक ड्रेक्स की गेंद पर आउट हुए। सूर्यकुमार यादव 65 रन बनाकर पारी की आखिरी गेंद पर आउट हुए और वेंकटेश अय्यर 35 रन बनाकर नाबाद रहे। सीरीज में अजेय बढ़त बना चुकी टीम इंडिया तीसरे मैच में चार बदलाव के साथ उतरी। पूर्व कप्तान विराट कोहली और विकेटकीपर बल्लेबाज रिषभ पंत को पहले ही टीम से छुट्टी दे दी गई थी। उनकी जगह प्लेइंग घ् में रितुराज गायकवाड़ और श्रेयस अय्यर को मौका मिला। इसके अलावा गेंदबाजी में भी बदलाव हुआ। भुवनेश्वर कुमार और यजुवेंद्रा चहल को आराम दिया गया। आवेश खान और शार्दुल ठाकुर को मौका मिला। वेस्टइंडीज टीम में भी चार बदलाव हुआ। रितुराज गायकवाड़, ईशान किशन (विकेटकीपर), रोहित शर्मा (कप्तान), श्रेयस अय्यर, सूर्यकुमार यादव, वेंकटेश अय्यर, दीपक चाहर, शार्दुल ठाकुर, हर्षल पटेल, रवि बिशनेई, अवेश खान। शाई होप, काइल मेयर्स, निकोलस पूरन (विकेटकीपर), रोवमैन पावेल, रस्टन चेज, कीरोन पोलार्ड (कप्तान), जेसन होल्डर, फैबियन एलन, रोमारियो शेफर्ड, हेडन वाल्श, डोमिनिक ड्रेक्स। ईडन में टी-20 सीरीज का आखिरी मैच सीमित दर्शकों की मौजूदगी में हुआ। मालूम हो कि बीसीसीआइ की तरफ से आखिरी मैच के लिए 20,000 दर्शकों की स्टेडियम में प्रवेश की अनुमति दी गई थी। मैच देखने आए दर्शकों में बंगाल क्रिकेट संघ के सदस्य शामिल थे। मैच का शुभारंभ पूर्व तेज गेंदबाज अजित अगरकर ने ईडन में लगा घंटा बजाकर किया।

सूर्यकुमार यादव का तूफानी अर्धशतक 209.68 की स्ट्राइक रेट से की बल्लेबाजी, केवल एक चौका लगाया

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे टी- 20 मैच में टीम इंडिया के बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने तूफानी बल्लेबाजी की। उन्होंने महज 31 गेंदों पर 65 रनों की पारी खेली। यह उनके करियर की चौथी फिफ्टी थी। खास बात ये रही कि इस पारी के दौरान उन्होंने केवल

एक चौका जड़ा और सात गगनचुंबी छक्का लगाया। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 209.68 का रहा। दाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने वेंकटेश अय्यर के साथ मिलकर न सिर्फ टीम इंडिया को संकट के उबारा बल्कि बड़े स्कोर तक पहुंचाया। एक समय लग रहा था कि टीम 150 के स्कोर तक पहुंच पाएगी या नहीं। विंडीज टीम के कप्तान कीरोन पोलार्ड ने एक बार फिर टास जीता और पिछले मैच की तरह ही लक्ष्य का पीछा करने का फैसला किया। ऐसे में टीम इंडिया 14 ओवर का खेल समाप्त होने तक चार विकेट खोकर 93 रन बना सकी थी। इसके बाद सूर्यकुमार ने वेंकटेश के साथ मिलकर 37 गेंदों पर 91 रनों की साझेदारी की। वेंकटेश अय्यर ने विस्फोटक बल्लेबाजी की। उन्होंने 19 गेंदों पर 35 रनों की पारी खेली। इस दौरान चार चौका और दो छक्के लगाए। सूर्यकुमार पारी की आखिरी गेंद पर आउट हुए। टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा ने सलामी जोड़ी में प्रयोग करते हुए रितुराज गायकवाड़ (4) को सीरीज में पहली बार मौका देते हुए इशान किशन (34) के साथ पारी की शुरुआत करने भेजा। रितुराज इस मौके का फायदा नहीं उठा पाए। वह जेसन होल्डर की गेंद पर काइल मेयर्स को कैच थमा बैठे। रोहित ने इसके बाद श्रेयस अय्यर (25) को भेजा। उन्हें भी सीरीज में पहली बार मौका दिया गया था। श्रेयस ने तेजी से रन बनाने शुरू किए। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 53 रन जोडे। हालांकि वे इसे बड़ी पारी में तब्दील नहीं कर पाए। हेडन वाल्श की गेंद पर जेसन होल्डर ने श्रेयस का कैच लपका। इसके बाद रोस्टन चेज ने सेट हो चुके इशान को क्लीन बोल्ड कर दिया। इसके बाद डोमिनिक ड्रेक्स ने कप्तान रोहित शर्मा (7) को क्लीन बोल्ड कर दिया।

राशिफल

मेष-: आज कोई लेन-देन सोच-समझकर करें। एक तरफा प्यार आपको निराश कर सकता है। नई योजनाएं आकर्षक होंगी और अच्छी आमदनी का जरिया साबित होंगी।

वृष-: आज भाग्य आपका साथ देगा। दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा। कार्यक्षेत्र में आज आपको दो गुना लाभ मिलने की संभावना है। निवेश करने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लें तो बेहतर होगा।

मिथुन-: जीवनसाथी के मामले में बेवजह की टांगें लगाने से बचें. बेहतर होगा कि आप अपना खुद का व्यवसाय रखें। हस्तक्षेप कम से कम करें, अन्यथा यह निर्भरता का कारण बन सकता है।

कर्क-: आज के दिन किसी काम की तैयारी और शुरुआत करने से पहले तर्क की परीक्षा को गंभीरता से लेना सही रहेगा. संतान पक्ष से सहयोग की कमी रहेगी।

सिंह-: आज आपके परिवार में खुशियों की वृद्धि होगी. संतान की शिक्षा में उन्नति संभव है। माता-पिता का स्वास्थ्य आज बहुत अच्छा रहेगा। उनसे भी आपको पूरा सहयोग मिलने की उम्मीद है

कन्या-: आज का दिन विशेष है, क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य आपको कुछ असाधारण कार्य करने की क्षमता देगा. आज आप ऊर्जा से भरे रहेंगे और यह संभव है कि अचानक आपको अनदेखा लाभ प्राप्त होगा।

तुला-: आज आपको शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी. आज का दिन मौज-मस्ती और आनंद से भरा रहेगा क्योंकि आप जीवन को पूरी तरह से जीएंगे।

वृश्चिक-: छात्रों को सफलता के लिए थोड़ी अधिक मेहनत करनी पड़ेगी. आपकी मेहनत भी रंग लाएगी। घर में सुख-सुविधाओं से जुड़ा कुछ नया सामान खरीदने की भी संभावना है।

धनु-: घृणा को दूर करने के लिए संवेदनशीलता का स्वभाव अपनाएं, क्योंकि घृणा की आग बहुत शक्तिशाली होती है और शरीर के साथ-साथ मन को भी प्रभावित करती है

मकर-: आज आप अपने कार्य संबंधी यात्रा की तैयारी करेंगे. यह यात्रा आपको सफलता दिलाएगी। आज आप नई योजनाएँ बनाएंगे। धन प्राप्ति संभव है।

कुंभ-: आज का दिन अच्छा रहेगा. आज किसी नए प्रोजेक्ट में अपनी ऊर्जा लगाएं, आपको दोगुना लाभ होगा। यदि आप सरकारी अधिकारी हैं तो आपके तबादले का योग बन रहा है।

मीन-: आज आप जीवन का आनंद लेने के लिए खुद को सहज और सही मूड में पाएंगे। दिन के दूसरे भाग में आर्थिक लाभ होगा। अपनी गोपनीय जानकारी अपने जीवनसाथी के साथ साझा करने से पहले अच्छी तरह सोच लें।

सुनील गावस्कर ने विराट कोहली को आराम देने पर जताई हैरानी, पढ़ें- भारत-विंडीज सीरीज पर और क्या कहा

नई दिल्ली। भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरे टी-20 मैच में करीबी मुकाबला देखने को मिला जहां विंडीज के पास अंतिम ओवर में अविश्वनीय जीत हासिल करने का अवसर था। दुख की बात रही कि कैरेबियाई टीम के पास कालीस ब्रैथवेट जैसा कोई था, जिसने छह साल पहले इसी मैदान पर आइसीसी टी-20 विश्व कप के फाइनल मुकाबले में इंग्लैंड के खिलाफ लगातार चार छक्के जड़कर टीम को जीत दिलाई थी। पावेल ने भी दो छक्के लगाए, लेकिन हर्षल पटेल ने अंतिम दो गेंदें जिस तरह से डाली और टीम को आठ रन से जीत दिलाई उससे उन्होंने साबित किया कि क्यों वह कप्तान की पसंद थे। इस सीरीज से चयनकर्ता समिति के पास उन खिलाडियों को देखने का मौका मिला जो डगआउट में रिजर्व खिलाड़ी के तौर पर बैठे थे। वेस्टइंडीज के इस सीरीज के बाद घर लौटने के चार दिन बाद ही भारत की श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 सीरीज होनी है। भारत के पास आज की तारीख में टी-20 के लिए कई बेहतरीन खिलाड़ी उपलब्ध हैं। यहां तक कि वे दो टीमों को खिलाने का जोखिम उठा सकते हैं और फिर भी जीतने में सक्षम है। यह देखना दिलचस्प होगा कि सर्वश्रेष्ठ भारतीय टीम और भारत की रिजर्व बेंच टीम के खिलाफ अगर मैच हो तो इसका नतीजा क्या रहेगा। इससे अचंभा नहीं होगा अगर रिजर्व टीम मैच को अंत तक लेकर चली जाए। दरअसल, पहले टी-20 में आसान जीत के बाद मन में यह खयाल जरूर आया कि मौजूदा भारतीय टीम और रिजर्व बेंच के बीच मुकाबला शायद ज्यादा मनोरंजक होता। लेकिन दूसरे मैच

के बाद उम्मीद जगी है कि वेस्टइंडीज की टीम दौरे का अंत सही तरह करना चाहेगी। वेस्टइंडीज क्रिकेट का बहुत बड़ा प्रशंसक होने के नाते उन्हें वनडे सीरीज में आत्मसमर्पण करते हुए देखकर दुख हुआ। हालांकि एक भारतीय के रूप में मैं परिणामों से बहुत खुश हूं लेकिन फिर भी एक करीबी मुकाबला चाहता था जो दूसरे टी-20 मैच में देखा गया था। कोहली को वेस्टइंडीज के खिलाफ आखिरी टी-20 मैच और श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज से रिलीज करना हैरानी की बात है। उनकी फार्म को लेकर कई तरह की बातें हो रही है और जब उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टी-20 में अच्छी बल्लेबाजी की उसके बाद उन्हें रिलीज करना समझ से परे है। एक बल्लेबाज के तौर पर जब आप रन बनाते हैं तो आप खेलना जारी रखना चाहते हैं जिससे लय नहीं टूटे। बल्लेबाज जानता है कि फार्म कितना लचीला होता है और कई बार नान स्ट्राइकर एंड पर भी कुछ गड़बड़ होने से बल्लेबाज अपनी लय खो देता है और इसी कारण जब रन बन रहे हों तो खेलना लगातार जारी रखना चाहिए। कोई थकान भी नहीं होती क्योंकि नियमित रूप से बल्ले के बीच में गेंद हिट करने से मन को संतुष्टि मिलती है। अगर बल्लेबाज फार्म में नहीं है तो उसे ब्रेक की जरूरत पड़ती है, जिससे वह इस बात का विश्लेषण कर सके कि क्या गलत हो रहा है। अगले 10 दिन मजेदार होने वाले हैं। हमें यह भी देखने मिलेगा कि कोहली अपने ब्रेक को मोहाली में होने वाले पहले टेस्ट मैच तक बढ़ाते हैं या नहीं। अगर ऐसा हुआ तो कोहली अपना 100वां टेस्ट बेंगलुरु में खेलेंगे। 2008 में आइपीएल की शुरुआत से रायल चेलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) के लिए खेलने वाले कोहली का 100वां टेस्ट बेंगलुरु में होता है तो यह एक बड़ा इवेंट होगा। किसी भी खिलाड़ी के लिए 100वां टेस्ट मैच विशेष होता है और कोहली इस खेल के महान खिलाड़ियों में से हैं। आरसीबी के लिए खेलने वाले एक अन्य खिलाड़ी एबी डिविलियर्स ने कुछ साल पहले बेंगलुरु में ही अपना 100वां टेस्ट था और भारत के खिलाफ मुकाबला होने के बावजूद जिस तरह दर्शकों ने डिविलियर्स का हौसला बढ़ाया वो देखने लायक था। अगर मैं सही हूं तो उन्होंने 80 से ज्यादा रन बनाए थे और शतक से चूक गए थे जहां ज्यादातर खेल बारिश की भेंट चढ़ा था। क्या कोहली का 100वां टेस्ट चंडीगढ़ में होगा जहां फिलहाल ठंड है या बेंगलुरु में होगा जहां आरसीबी द किंग के लिए एक इवेंट सुनिश्चित करेगी।

सम्पादकीय

वीर सावरकर के संदर्भ में तथ्यों के साथ समग्र दृष्टि का विस्तार

इतिहास में ऐसे अनेक मामले सामने आते रहे हैं जब कई महापुरुषों के सामाजिक योगदान को इतिहासकारों ने पर्याप्त स्थान नहीं दिया। जिन सावरकर ने गांधी और आंबेडकर से भी पहले बहुजन उत्थान के लिए कार्य किया और समाज सुधार की दिशा में व्यापक प्रयास किया, इतिहासकारों ने उन्हें समाज सुधारक महापुरुषों की चर्चा में कोई जगह नहीं दी। जिस '1857 के विद्रोह' को विदेशी ही नहीं, भारतीय इतिहासकार भी 'सिपाही विद्रोह' कहने में लगे थे, तब सावरकर ने उसे देश का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम बताया। अंग्रेजों द्वारा दी गई कालापानी की भयानक सजा भी काटी। इन सबके बावजूद वीर सावरकर को इतिहास में वह स्थान नहीं दिया गया, जिसके वह हकदार थे। विचारधारा पोषित इतिहासकारों ने ऐसा पहली बार नहीं किया है। ये निरंतर ऐसा लिखते रहे हैं। इनके द्वारा ऐसा इतिहास लिखने के कारण ही वर्तमान में सावरकर का नाम जब भी सामने आता है, तो विचारधाराएं दो विपरीत ध्रुवों पर खड़ी हो जाती हैं। एक गुट उन्हें पूजनीय मानता है तो दूसरा उन्हें सर्वथा त्याज्य समझता है। विचारों का यह भेद भारत के इतिहास में शायद ही किसी दूसरे स्वतंत्रता सेनानी के बारे में दिखाई देता हो। इस संदर्भ में विक्रम संपत, माफी मांगने वाले सावरकर के सच को बहुत ही विस्तार से अपनी किताब में लिखते हैं। न केवल माफी वाली बात, बल्कि वह हर उस बात का जवाब देते हैं जिसका विरोधियों के पास कोई तथ्यात्मक उत्तर नहीं है। विक्रम संपत ने अपनी कोई भी बात बिना तर्क और तथ्य के नहीं लिखी। उन्होंने हर बात को किसी न किसी हवाले से लिखा है। इस बीच एक और अच्छी बात यह हुई है कि दिल्ली हाईकोर्ट ने वीर सावरकर की जीवनी लिखने वाले विक्रम संपत को बड़ी राहत दी है। हाईकोर्ट ने अपने अंतरिम आदेश में कहा है कि कोई भी इतिहासकार विक्रम संपत के खिलाफ मानहानिकारी टिप्पणी नहीं कर सकेगा। दरअसल विक्रम संपत की किताब को लेकर इंटरनेट मीडिया पर बहस यहां तक आ पहुंची थी कि नकली और असली इतिहास क्या है और उसे नई पीढ़ी को इस तरह से कुंठित रूप से क्यों परोसा जा रहा है? इसी बहस में यह भी प्रशन आया कि देश की एक बड़ी संस्था जिसकी किताबों को देश की सबसे बड़ी परीक्षा के लिए आदर्श रूप माना जाता है वह एनसीईआरटी की इतिहास की पुस्तकों के साथ गड़बड़ी क्यों कर रही है? यह पहली बार नहीं है जब एनसीईआरटी को कठघरे में रखा गया है। कुछ माह पूर्व लेखक, अध्यापक और आरटीआइ कार्यकर्ता नीरज अत्री ने भी एनसीईआरटी द्वारा गलत इतिहास के परोसे जाने पर बात की थी। उनकी वह आरटीआइ सबसे ज्यादा प्रचलित हुई जिसमें उन्होंने एनसीईआरटी से 'टीपू सुल्तान के दान से बने मंदिरों की सूची की मांग की थी' और संस्था ने जवाब दिया था कि उनके पास इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए कोई दस्तावेज नहीं है। इसी क्रम में अब बात करते हैं महापुरुषों की एक चयनित सूची पर। इस देश में एक गिरोह विशेष द्वारा लगातार यह साबित करने की कोशिश की जाती है कि जो गांधीवादी नहीं है वह गोडसेवादी है। सवाल यह उठता है कि क्या कोई बोसवादी नहीं हो सकत क्या कोई टैगोरवादी नहीं हो सकता क्या कोई सावरकरवादी नहीं हो सकत क्या कोई अशफाकवादी या कलामवादी नहीं हो सकता आखिर कब तक इनके बनाए ढांचे वाले महापुरुषों को ढोया जाएगा। विक्रम संपत इनकी इसी मानसिकता को तोड़ते हैं और एक-एक करके इनके सारे आरोपों का सार्थक और तार्किक जवाब देते हैं। वह सावरकर के कानूनवेत्ता वाले पक्ष को उठाते हैं। वह लिखते हैं कि सावरकर जानते थे कि प्रत्येक राजबंदी को एक वकील करके अपना मुकदमा लडे की छूट होती है। उसी तरह सारे राजबंदियों को याचिका देने की छूट दी गई थी। इसलिए उन्होंने जेल से छूट कर देश सेवा में खुद को लगाने के लिए इस याचिका का इस्तेमाल किया था। इस याचिका में अंग्रेज हुकूमत से यह वादा किया जाता था कि यदि बंदी जेल से रिहा किया गया तो वह अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध कोई षड्यंत्र नहीं करेगा। महात्मा गांधी के शब्दों में कहें तो एक बुद्धिमान क्रांतिकारी के तौर पर सावरकर ने बड़ी चतुराई से इस याचिका का इस्तेमाल अपनी रिहाई के उद्देश्य से किया था।

हिजाब प्रकरण के संदर्भ में समाज को देखने का नजरिया

किसी भी समाज की परिपक्वता का अंदाजा किसी प्रकरण पर उसकी प्रतिक्रिया या आचरण द्वारा लगाया जा सकता है। कर्नाटक का हिजाब प्रकरण बेहद संवेदनशील है और एक नए विमर्श की आहट भी। उथली राजनीति और वोटों के ध्रुवी करण के बजाय इस प्रकरण से उठते कुछ प्रशन बेहद सामयिक हैं जिनका समाधान वर्तमान की अंतरदृष्टि द्वारा किया जा सकता है। किसी भी समस्या को देखने के लिए वर्तमान परिस्थितियों और किसी भी समाज का अतीत कैसा रहा है, इन बातों पर गौर करना चाहिए। इंटरनेट मीडिया के इस दौर में वायरल संस्कृति का उभार हुआ है जो बहुत तेजी से जन भावनाओं को प्रभावित करती है। भारत बहुलतावादी समाज है। इसके गौरवशाली अतीत की चादर पर कुप्रथाओं के छींटें भी है, लेकिन इस देश की सहिष्णु और तर्कवादी संस्कृति ने सदैव कुप्रथाओं पर बेबाकी से राय रखने की पूरी इजाजत दी है। साथ ही इन्हें समाप्त करने के लिए सक्रिय आंदोलनों का संचालन भी किया है। वैश्वीकरण के इस दौर में यह देखना जरूरी है कि हमारी संस्कृति के वे कौन से पक्ष हैं, जो नागरिकों के व्यक्तित्व के विकास में बाधक हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था भारतीय समाज की सच्चाई है। इसीलिए भारतीय समाज में महिला आंदोलनों की गति धीमी रही है। स्वामी विवेकानंद तो मुखर होकर कहते हैं कि महिला कल्याण का नेतृत्व महिलाओं के ही हाथ में होना चाहिए, पुरुष महिला के बारे में संवेदनशील होकर तो सोच सकता है, लेकिन यह केवल सहानुभूति होगी समानुभूति नहीं। हिजाब या पर्दा न केवल भारतीय समाज, बल्कि वैश्विक स्तर पर अधिकांश धर्मो और समाजों में किसी न किसी रूप में देखने को मिलता है। जहां भारत में उत्तर वैदिक काल में पर्दा प्रथा के उदाहरण देखने को मिलते हैं, वहीं ईसाइयत और इस्लाम में पर्दा संस्कृति अलग-अलग रूपों में आई। आज हिजाब प्रकरण को देखने का सबका अपना नजरिया है। लेकिन यदि हम धर्म या संस्कृति के नाम पर महिलाओं पर थोपे गए किसी आचरण को उनके नजरिये से देखें और कुप्रथाओं के उन्मूलन को उनके विवेक पर छोड़ दें तो यह किसी भी प्रगतिशील समाज के लिए ज्यादा सकारात्मक कदम होगा। खानपान या पहनावा व्यक्तिगत मामला है और हमें इन बातों को लेकर किसी के जीवन में गैर जरूरी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। एक नागरिक के तौर पर यदि हम सोचते हैं कि स्वतंत्र तरीके से जीवन जीना हमारी निजता का मौलिक अधिकार है तो हमें इस बात पर भी संजीदगी से आचरण करना चाहिए कि हम दूसरे के जीवन में गैर जरूरी हस्तक्षेप न करें। जहां तक हिजाब या पर्दा प्रथा की बात है तो हमें महिलाओं को अभिव्यक्ति का यह अवसर देना चाहिए कि वह स्पष्ट कर सके कि पर्दे के अंदर से वह दुनिया को कैसे देखती हैं। दुनिया के कितने रंग और रूप हैं।हिजाब प्रकरण को यदि विधिक नजरिये से देखें तो खानपान या पहनावा निजी चुनाव है, लेकिन सार्वजनिक संस्थाओं के अपने निजी कानून होते हैं और उनका पालन किसी भी व्यवस्था को बनाए रखने में मददगार होता है।

लोकतंत्र और चुनावी राजनीति की नियति को निर्धारित करता अस्मिता का पहलू

अस्मिता आज भारतीय राजनीति का मूल स्वर बन गई है। हालांकि अस्मिता भाव मानवीय समाज का मूलभाव नहीं रहा। मानवीय मूलभाव तो प्रेम, दया, सहिष्णुता आदि है किंतु अस्मिता का भाव, जो हममें बाहरी प्रभावों से विकसित होता है, वह आज एक प्रकार के मूलभाव में बदल रहा है। अस्मिता भाव असुरक्षा बोध, भिन्नता एवं अंतःसंघर्ष पर टिका होता है। आज चाहे दुनिया का कोई भी विकसित, विकासशील या अविकसित देश हो, वह किसी न किसी प्रकार अस्मिता बोध से उपजे टकरावों से गुजर रहा है। जनतंत्र की राजनीति अस्मिता भाव को बढ़ाती ही है। चुनाव अस्मिता को राजनीतिक गोलबंदी के अस्त्र में बदल देते हैं। अस्मिताएं चाहे जाति से जुड़ी हों या मजहब से या क्षेत्रीयता से, वे सब चुनावों के वक्त मुखर होकर उभर आती है। दो राज्यों उत्तराखंड और गोवा में विधानसभा चुनाव निपट गए है। उत्तर प्रदेश, पंजाब और मणिपुर के लिए प्रक्रिया जारी है। चुनाव प्रचार, जन गोलबंदी और हिस्सेदारी पर अगर नजर डालें तो साफ दिखाई पड़ता है कि किस प्रकार अस्मिता भाव ने चुनावों को जकड़ रखा है। चुनावों में टिकट वितरण के लिए अस्मिता को आधार बनाकर विभिन्न सामाजिक समूहों को जोड़ने की प्रवृत्ति तो दिखाई पड़ती ही है, इसके साथ ही चुनावी विमर्श के माध्यम से उसे हवा देने की प्रक्रिया भी चलती रहती है। यही नहीं चुनाव बाद विभिन्न अस्मिताओं को मंत्रिपरिषद में जगह देकर संतुष्ट भी किया जाता रह अस्मिता का विमर्श एक महत्वपूर्ण स्वर के रूप में सुनाई पड़ रहा है, वहीं पंजाब में धार्मिक, पंथिक, क्षेत्रीय एवं जातीय अस्मिताओं का मिलाजुला विमर्श दिखाई पड़ रहा है। यहां सिख और हिंदू जैसी अस्मिताओं के अतिरिक्त जटसिख और दलित जैसी अस्मिताएं भी सक्रिय हैं। इतना ही नहीं दलितों में भी अनेक जातीय अस्मिताएं प्रभावी हैं। इनके साथ ही पंजाब के भीतर मालवा-दोआब जैसी अनेक उपक्षेत्रीय अस्मिताएं भी प्रभावी हैं। मणिपुर में क्षेत्रीय अस्मिता के साथ ही जनजातीय आबादी का विमर्श भी चुनावों के केंद्र में रहता है। यहां हिंदू और ईसाई जैसी धार्मिक अस्मिताएं चुनावी गोलबंदी का आधार बन जाती है। उत्तराखंड में ब्राह्मण और ठाकुर जैसी जातीय अस्मिताओं के साथ ही गढ़वाल एवं कुमाऊं जैसी उपक्षेत्रीयता की धमक भी सुनी जा सकती है। ये अस्मिताएं क्या करती है? कैसे काम करती है? कैसे हमारे मन को बदलती हैं? इन बिंदुओं को समझने के क्रम में यह जानना आवश्यक है कि अस्मिता के विमर्श की रचना एक 'कल्पित अन्य' के सृजन पर आधारित होती है। इसमें पहले 'हम' (उपजातियों का समूह) रचा जाता है। फिर 'वे' की परिकल्पना की जाती है और उनके बीच टकराव का संबंध खड़ा किया

जाता है। एक समरस समाज में अवसरों पर कब्जे की अकुलाहट एक असुरक्षा बोध पैदा करती है। यही असुरक्षा बोध 'अन्य' का सृजन करता है। इसी अदृश्य असुरक्षा बोध को विस्तारित कर कुछ राजनीतिक शक्तियां चुनावी गोलबंदी करने के साथ ही समाज में भ्रंश रेखाओं को उभारकर तनाव बढ़ाती हैं। इस प्रकार अस्मिता बोध एक सामाजिक बोध न होकर जनतांत्रिक राजनीति के एक उपकरण में बदल जाता है। अस्मिता बोध दोधारी तलवार जैसा है। एक ओर यह किसी समूह को आपस में जोड़ता है तो दूसरी ओर उस सामाजिक समूह को अन्य समूहों से पृथक भी करता है। अस्मिता बोध जब लघुता की ओर लौटता है तो एक ही अस्मिता के भीतर अनेक उप-अस्मिताएं सृजित करता है। वहीं जब वह वृहद स्वरूप की ओर बढ़ता है तो अनेक उप-अस्मिताओं को स्वयं में समाहित करता है। जैसे हमारे सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श में धार्मिक अस्मिताएं प्रायः जातीय अस्मिताओं का स्वयं में समाहार कर लेती हैं। जब जातीय अस्मिताएं राजनीति के सबल हथियार के रूप में राजनीतिक शक्तियों के हाथ आ जाती है तो कई बार धार्मिक वृत्त को तोड़कर जातीय अस्मिता के आधार पर राजनीतिक गोलबंदी करती हैं। किसी भी सामाजिक समूह की जातीय एवं धार्मिक अस्मिताओं के बीच एक सतत द्वंद्व चलता रहता है। इस द्वंद्व में कई बार जातीय अस्मिताओं को धार्मिक अस्मिताएं अपने में समाहित करने में सफल हो जाती हैं। उत्तर प्रदेश में श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से सशक्त हुई हिंदुत्व की अस्मिता एवं मंडल आंदोलन से उभरी जातीय अस्मिताओं के अंतर्संबंधों को इस आलोक में समझा जा सकता है। अस्मिता बोध को अगर हाशिये पर बसे सामाजिक समूहों के संदर्भ में देखें तो कई बार जनतांत्रिक राजनीति में यह प्रगतिशील भूमिका के साथ सामने आता है। यह निर्बल सामाजिक समूहों को अपनी उपस्थिति दर्ज कराने, शक्तिवान बनाने, हिस्सेदारी की मांग करने एवं सम्मान की चाह दिलाने के लिए किए जाने वाले संघर्षों को गति देती है। भारतीय जनतंत्र की राजनीति में दलित अस्मिता बोध के विकास को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है, किंतु यही अस्मिता बोध एक समय बाद हाशिये के सामाजिक समूहों में एक छोटा अभिजात्य वर्ग सृजित कर उसके हाथों में खिलौने की तरह हो जाता है। यह छोटा अभिजात्य वर्ग उसे अपनी तरह से इस्तेमाल करने लगता है। तब उपेक्षित सामाजिक समूहों में अस्मिता बोध प्रतिक्रियावादी भूमिका निभाने लगता है। ऐसे में वह उन निर्बल समूहों के सक्षम बनने की प्रक्रिया को अक्षम बनाने लगता है। इस प्रकार अस्मिता बोध राजनीति में अनेक अंतर्विरोधों एवं द्वंद्वों से परिपूर्ण होने के साथ ही समाज एवं राजनीति में टकराव एवं जटिलताएं भी उत्पन्न करता है। लघु अस्मिताएं वृहद अस्मिताओं के साथ सहज हो जाती हैं, किंतु वहां भी टकराव जारी रहते हैं। उत्तर प्रदेश चुनाव में हिंदुत्व की अस्मिता एवं जातीय अस्मिता के बीच ऐसा ही संवाद चल रहा है। हालांकि समरस समाज अस्मिताओं के समाहार की ओर बढ़ने से ही संभव है, जो सबके लिए समानता एवं सम्मान की स्थिति बनाकर पाया जा सकता है। बाबा साहब आंबेडकर अस्मिता बोध के महत्व को बखूबी समझते थे। वह मानते थे कि अंततः सभी अस्मिताओं को बूंद की तरह मानवीय समुद्र में तिरोहित होना होगा। यह शायद उन पर भगवान बुद्ध के चिंतन का ही प्रभाव था कि वह अस्मिता बोध के महत्व को समझते हुए भी उसके समाहार के आकांक्षी थे।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए बने कानूनों में अक्सर बिना किसी साक्ष्य के ही पुरुषों को शोषक मान लिया जाता है

महिला को पति और उसके रिश्तेदारों की क्रूरता से बचाने के लिए लाए गए दहेज निषेध अधिनियम के दुरुपयोग पर उच्चतम न्यायालय ने एक बार फिर चिंता जताई। बीते सप्ताह सवीच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में कहा कि 'हाल के दिनों में देश में वैवाहिक मुकदमेबाजी काफी बढ़ गई है। विवाह संस्था को लेकर अब पहले से अधिक असंतोष और टकराव है। परिणामस्वरूप व्यक्तिगत झगड़े के चलते पति और उसके रिश्तेदारों के विरुद्ध आइपीसी की धारा 498 ए (दहेज प्रताड़ना में दंड) के प्रविधानों का हथियार की तरह इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति बढ़ी है।' बीते दशकों में देश की विभिन्न अदालतों ने 498 ए के दुरुपयोग को लेकर तीखी टिप्पणियां की हैं। अमरजीत कौर और अन्य बनाम जसविंदर कौर और अन्य, 2010 मामले में पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने कहा था कि 'असंतुष्ट पतिन्यों द्वारा 498 ए के प्रविधानों को हथियार के रूप में इस्तेमाल करना आम बात हो गई है। पति को परेशान करने का सबसे आसान तरीका यह है कि उसके रिश्तेदारों को इस प्रविधान के तहत फंसाया जाए। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि पति के शय्याग्रस्त दादा-दादी हों या दशकों से विदेश में रहने वाले रिश्तेदार। नहीं की जा सकती कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए बने कानूनों में अमूमन बिना किसी सुबूत के पुरुषों को शोषक मान लिया जाता है। इस धारणा को निरंतर प्रतिस्थापित करने का प्रयास भी किया गया है कि महिलाएं क्रोध, ईर्ष्या और वैमनस्य के भाव से मुक्त हैं। 498 ए कानून के वास्तविक पालन की सबसे बड़ी चुनौती वे दांवपेच है, जो स्वार्थ सिद्धि के इर्द-गिर्द बुने जाते हैं। दहेज और स्त्रीधन/उपहार के मध्य महीन रेखा कब मिट जाती है, इसे सुलझाना सहज नहीं है। वैवाहिक जीवन में जब तक सौहार्द है तब तक लड़की को दिया धन 'उपहार' होता है, परंतु पारिवारिक कड़वाहट के उपजते ही यकायक उपहार 'दहेज' की परिवर्तित संज्ञा धारण कर लेता है।देना अपराध है तो लड़की के परिवार के सदस्य क्या उस परिवार के अपराध में समान रूप से भागीदार नहीं हो जाते, जिसने दहेज लिया है? एक गंभीर प्रशन यह भी है कि दहेज के अधिकांश मामलों में यह देखने में आता है कि साधारण परिवार से संबंध रखने वाले भी लाखों और करोड़ों रुपये में दहेज देने का आरोप लगाते हैं, क्योंकि वे इस सत्य से परिचित हैं कि जितनी अधिक राशि का उल्लेख किया जाएगा, मामला उतना ही संगीन होगा। इस संदर्भ में 23 फरवरी, 2007 को श्रीमती नीरा सिंह बनाम राज्य (राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार) के संबंध में न्यायालय का वक्तव्य उल्लेखनीय है। न्यायालय ने कहा था कि 'दहेज की मांग के बावजूद बालिग और शिक्षित महिला अगर उस व्यक्ति से शादी करती है तो वह और उसका परिवार दहेज निषेध अधिनियम के तहत अपराध में भागीदार बन जाता है।'

न्यायालय ने यह भी कहा था कि 'अब समय आ गया है कि अदालतें इस तरह के धन के स्रोत की जानकारी देने और आयकर रिटर्न से आय के सत्यापन पर जोर दें। न्यायालय ने पुलिस को भी हिदायत दी कि उसे दहेज निषेध अधिनियम के तहत नियमों की पालना पर जोर देना चाहिए। यदि नियमों का पालन नहीं किया गया तो किसी भी शिकायत पर विचार नहीं करना चाहिए। न्यायालय ने इस बात पर भी जोर दिया कि मेट्रोपालिटन मजिस्ट्रेट को 'दहेज देने' के संबंध में अधिनियम के तहत अपराध का संज्ञान लेना चाहिए। न्यायालय के इन आदेशों को अगर अमली जामा पहनाया गया होता तो कई परिवार बेकुसूर होते हुए भी सलाखों के पीछे बंद नहीं होते। दहेज देने के संबंध में निर्देशों पर पुलिस-प्रशासन सामान्यतः चुप्पी साधे रखता है। ऐसे मामले अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं, जहां दहेज देने के अपराध में पुलिस ने शिकायत दर्ज की हो। ऐसा भी तब ही हो पाया है जब न्यायालय ने इस संबंध में आदेश दिए है। नवंबर 2008 में नमित बनाम आरसी मामले में नोएडा की एक अदालत ने पुलिस को दहेज देने के आरोप में एक महिला और उसके माता-पिता के विरुद्ध केस दर्ज करने का आदेश दिया था। सबसे अधिक पीड़ादायक यह है कि झूठे आरोपों में फंसे लड़के और उसके परिवार के सदस्य वर्षो तक जेल में न्याय की प्रतीक्षा करते रहते हैं। प्रीति गुप्ता और अन्य बनाम झारखंड राज्य और अन्य, 2010 मामले में उच्चतम न्यायालय ने कहा था कि 'मुकदमे में बरी होने पर भी अपमान के गहरे दागों को मिटाया नहीं जा सकता। इन शिकायतों की एक बड़ी संख्या ने न केवल अदालतों पर बोझ बढ़ा दिया है, बल्कि सामाजिक अशांति भी उत्पन्न की है। यह उचित समय है कि विधायिका को व्यावहारिक वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए मौजूदा कानून में उपयुक्त बदलाव करने चाहिए, परंतु दुखद पहलू यह है कि एक दशक बीत जाने पर भी ऐसा नहीं हो पाया है। 498 ए के दुरुपयोग का एक बड़ा कारण यह भी है कि दहेज देने के आरोप लगाने वाले इस भय से मुक्त हैं कि उनका असत्य न्यायालय के समक्ष आने पर भी उन पर आपराधिक या दंडात्मक कार्रवाई होने की आशंका रहेगी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि समाज एक चिरस्थायी और निर्जीव वस्तु नहीं है, अपितु वह तो निरंतर परिवर्तित होने वाली सामाजिक व्यवस्था है। इसलिए जरूरी हो जाता है कि बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप दशकों पुराने निर्मित कानूनों में बदलाव हो, अन्यथा समाज में बिखराव बढ़ेगा और विवाह के साथ परिवार संस्था भी कमजोर होगी।

रूस-यूक्रेन तनाव बना देश को ऊर्जा के मोर्चे पर आत्मनिर्भर बनाने के लिए मंथन का पड़ाव

यूक्रेन को लेकर रूस और नाटो देशों के बीच चल रहे टकराव की वजह से यूरोप में गैस के दाम बढ़कर तीन गुना हो चुके हैं। यूरोप की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश जर्मनी अपनी जरूरत की लगभग आधी गैस रूस से खरीदता है। इटली की लगभग 40 प्रतिशत और पोलैंड की 46 प्रतिशत गैस रूस से आती है। फ्रांस की एक चौथाई गैस और फिनलैंड, बुल्गारिया और स्लोवाकिया की जरूरत की अधिकतर गैस रूस से आती है। रूस की गैस दो पाइपलाइनों के जरिये यूरोप आती है। पुरानी पाइपलाइन यूक्रेन से होकर गुजरती है और दूसरी नई पाइपलाइन काला सागर में बिछाई गई है, जिसके रास्ते गैस सप्लाई अभी शुरू नहीं हुई है। यूक्रेन में लड़ाई छिड़ने या तनाव बढ़ने की सूरत में रूस से यूरोप आने वाली गैस की सप्लाई बंद हो सकती है। इसलिए रूसी गैस पर निर्भर यूरोपीय देशों को अपनी-अपनी ऊर्जा नीति पर पुनर्विचार करना पड़ रहा है। फ्रांस और इटली अपनी जरूरत की गैस कतर जैसे दूसरे गैस निर्यातक देशों से लेने की योजना बना रहे हैं, जबकि जर्मनी परमाणु ऊर्जा के विकल्प पर पुनर्विचार कर रहा है, जिसे उसने जापान के फुकुशिमा परमाणु बिजलीघर दुर्घटना के बाद बंद कर दिया था। अमेरिका भी गैस भेजने की पेशकश कर रहा है, लेकिन जर्मनी और फ्रांस की ग्रीन पार्टियां स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाकर आत्मनिर्भरता हासिल करने का दबाव डाल रही है, जिससे जलवायु परिवर्तन की रोकथाम में भी मदद मिल सके। भारत के लिए यूक्रेन संकट कई तरह की चुनौतियां खड़ी कर सकता है। यदि लड़ाई छिड़ती है या तनाव और बढ़ता है तो कच्चे तेल और गैस के दामों में और उछाल आ सकता है। भारत का सालाना तेल आयात 7.2 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 9.5 लाख करोड़ रुपये हो चुका है, जो देश के कुल आयात के 20 प्रतिशत से भी अधिक है। इससे एक तो भारत का भुगतान संतुलन बिगड़ता है। दूसरे महंगाई बढ़ती है, जो सरकार के लिए

राजनीतिक संकट खड़ा कर सकती है। महंगाई काबू में रखने के लिए सरकार को पेट्रोल-डीजल का शुल्क कम रखना पड़ता है, जिससे सरकार का राजस्व घटता है और बजट घाटा बढ़ता है। राजस्व कम मिलने की वजह से सरकार के पास रसोई गैस और डीजल जैसी चीजों पर सब्सिडी देने की गुंजाइश कम बचती है। तेल के दाम बढ़ने का सबसे बुरा असर आर्थिक विकास की दर पर पड़ता है, जिसका स्वस्थ रहना भारत जैसे विकासोन्मुख देश के लिए आवश्यक है। पेट्रोल, डीजल और गैस के दाम बढ़ने का असर वस्तुओं के निर्माण और ढुलाई पर पड़ता है, जिससे चीजें महंगी होती हैं। महंगाई बढ़ने से लोगों की क्रयशक्ति घटती है, जो मांग को घटाती है। मांग घटने से आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ने लगती है और मंदी की ओर ले जाने वाला दुष्चक्र शुरू हो जाता है। इससे बचने का एक ही रास्ता है और वह है ऊर्जा में आत्मनिर्भरता हासिल करना। अमेरिका ने अपना तेल और गैस का उत्पादन बढ़ाकर आत्मनिर्भरता हासिल की है। भारत के पास एक तो तेल और गैस के इतने स्रोत नहीं हैं और हों भी तो हमारे शहरों की तेजी से खराब होती जलवायु इनका उत्पादन बढ़ाने अनुमति नहीं देती। इसलिए भारत को स्वच्छ ऊर्जा में भारी निवेश करते हुए आत्मनिर्भरता हासिल करनी होगी। इससे एक तो तेल और कोयले जैसे खनिज ऊर्जा साधनों पर हमारी निर्भरता कम होगी और दूसरे हमारे शहरों की जलवायु में भी सुधार होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने देश की स्वाधीनता की सौवीं वर्षगांठ तक ऊर्जा में आत्मनिर्भरता हासिल करने का लक्ष्य रखा है, परंतु देश की आर्थिक प्रगति को यूक्रेन और ईरान जैसे कूटनीतिक संकटों से निरापद बनाने और देश को बिगड़ते जलवायु के प्रभावों से बचाने के लिए युद्धस्तर पर काम करके इस लक्ष्य को हासिल किए जाने की जरूरत है। जब तक हम इसे हासिल नहीं करते तब तक हमारी कूटनीति भी तेल की कूटनीति की बंधक बनी रहेगी। स्थिति यह है कि हम इराक संकट से उबरते हैं तो ईरान संकट में फंस जाते हैं। ईरान संकट से उबरते, उससे पहले यूक्रेन का संकट खड़ा हो गया। दुर्योग से खनिज ऊर्जा के स्रोत है भी ऐसे देशों के पास, जहां लोकतंत्र के बजाय तानाशाही या राजनीतिक अस्थिरता रहती है।

संक्षिप्त समाचार

पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा ने जनता से की अपील- पीडीपी पसंद न आए तो पीएजीडी के दूसरे दल को दे देना वोट

राजौरी। जम्मू कश्मीर में अभी परिसीमन का अंतरिम मसौदा ही आया है, लेकिन कश्मीर केंद्रित दलों की सांसें फूली हुई हैं। इन दलों को आगामी विधानसभा चुनावों में सियासी जमीन पूरी तरह खिसकने का डर सताने लगा है। सबसे अधिक भयभीत पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती नजर आ रही हैं। तभी तो पुंछ में जनता के लिए उनके मुख से निकला-चुनावों में अगर लोगों को पीडीपी पसंद न आए तो पीपुल्स एलायंस फार गुपकार डिक्लेरेशन (पीएजीडी) के किसी अन्य दल को वोट दे देना। महबूबा की पार्टी पीएजीडी का ही हिस्सा है। नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष डा. फारूक अब्दुल्ला गुपकार गठबंधन के अध्यक्ष हैं, जबकि उपाध्यक्ष खुद महबूबा मुफ्ती हैं। दरअसल, जम्मू ही नहीं, कश्मीर में भी महबूबा की पार्टी अपनी सियासी जमीन का अधिकतर हिस्सा खो चुकी है। वर्तमान में वह जम्मू संभाग में नियंत्रण रेखा से सटे राजौरी और पुंछ के दौरे पर हैं। रविवार को वह पुंछ के सुरनकोट में थीं। यहां डाक बंगला में उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित किया। इसमें उन्होंने कहा कि हालांकि, जम्मू कश्मीर में तत्काल चुनावी परिदृश्य नहीं है, लेकिन चुनाव होने हैं। मैं आप सभी से अपील करती हूं कि केवल पीएजीडी के किसी भी दल के उम्मीदवार के पक्ष में ही वोट करें। यदि आप पीडीपी को पसंद नहीं करते हैं तो पीएजीडी के किसी अन्य दल के उम्मीदवार को वोट दें, लेकिन केवल पीएजीडी को ही वोट दें। भाजपा को निशाने पर लेते हुए पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा कहा कि यह पार्टी आगामी जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनावों में किसी भी तरह बहुमत हासिल करना चाहती है 2019 के फैसले को सही सही साबित कर सके। उन्होंने आरोप लगाया कि जम्मू कश्मीर राज्य पुनर्गठन अधिनियम के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में दायर मामले को कमजोर करना चाहती हैं।

घर चलो घर घर चलो अभियान

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल । क्षकार्यक्रम मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी भोपाल के निर्देश पर जिला कांग्रेस कमेटी शहडोल के आवाहन पर एवं संगठन मे ब्लाक कांग्रेस कमेटी ब्योहारी द्वारा 16वें दिन रविवार को ब्योहारी विधानसभा क्षेत्र के ग्राम मऊ में घर चलो घर घर चलो अभियान चलाया गया एवं कांग्रेस पार्टी द्वारा चालाए जा रहे सदस्यता अभियांन के तहत ग्रहण करवाई गई और स्थानीय निवासियो से जन संपर्क कर कांग्रेस की विचारधारा को घर घर तक पहुंचाया गया अभियान के दौरान भारी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता व आम जन मानस सहित यह रहें उपस्थित एडवोकेट पुष्पेंद्र परौहा जिला युवा कांग्रेस महासचिव सतेन्द्र त्रिपाठी पिंटू नगर युवा कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पेंद्र पटेल नागेन्द्र वर्मा आईटीसेल कांग्रेस अध्यक्ष आयुष ताम्रकार युवा कांग्रेस महामंत्री विक्रम सिंह बघेल अखिलेश सोनी रानी राठौर कविता राठौर दीपसेन सुमन रौठर इन्द्रेश सिंह अमित सरकार बुद्धसेन राठौर राहुल अवधिया ऊषा लखेरा आरती राठौर गायत्री राठौर सुमन राठौर याशोदा राठौर सहित सैकड़ों कार्यकर्ता व ग्रामीण महिलाएं और आमजन मानस उपस्थित रहे

प्रभारी राजेंद्र मिश्रा जी के मार्गदर्शन 100 से ज्यादा लोगों को सदस्यता

योर लाइफ फिटनेस जिम का हुआ उदघाटन

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ला

नोएडा। सेक्टर 61 स्थित शॉप्रिक्स मॉल में रविवार को योर लाइफ फिटनेस जिम का शुभारंभ किया गया। भौकाल वेब सीरीज के प्रमुख कलाकार प्रदीप नागर समाजवादी पार्टी के नेता तथा नोएडा विधानसभा के प्रत्याशी सुनील चौधरी सपा नेता सार्थक यादव तथा विनोद यादव ने विधिवत फीता काटकर इस नए जिम का उद्घाटन किया। योर लाइफ फिटनेस जिम के मालिक महेश यादव पवन यादव तथा मोंटी यादव ने बताया कि यह अत्याधुनिक जिम लोगों की जरूरतों के मुताबिक सभी उपकरणों से लैस है तथा यहां पर छात्रों महिलाओं तथा युवा जोड़ों के लिए स्पेशल डिस्काउंट की व्यवस्था की गई है। शुरुआती दौर में लोग यहां पर आकर इस जिम में ट्रायल भी ले सकते हैं। इस जिम में सभी उपकरण अमेरिकी कंपनी साइबैक्स के हैं इसके अलावा वैस्कुलर ट्रेनिंग प्रशन ट्रेनिंग जुंबा क्लासेस योगा क्लासेस बीएमआई मशीन स्टीम स्वराज की भी खास विशेषताएं हैं। जिम के संचालक महेश यादव ने बताया कि योर नेम नोएडा में कई स्थानों पर जिम है लेकिन यह जिम युवाओं की बढ़ती अपेक्षाओं तथा मांग के अनुरूप बनाया गया है ताकि लोगों को यहां पर हर तरह की सुविधा प्राप्त हो सके उन्होंने बताया कि यहां कार पार्किंग की भी निशुल्क सुविधा है जिससे आने वाले लोगों को मुसीबत का सामना न करना पड़े। इस मौके पर राजेंद्र यादव अजय मुखिया चमन अवाना अरविंद भाटी समेत क्षेत्र के विभिन्न राजनीतिक दलों के अलावा गणमान्य लोग भी मौजूद थे। उद्घाटन के पूर्व प्रातः विधिवत हवन पूजन के साथ जिम का शुभारंभ भी किया गया। संचालकों का दावा है कि हर आयु वर्ग के लोगों के लिए यह जिम वरदान साबित होगा।

जिले में 1 से 5 मार्च तक चलेगा पौध रोपण महा अभियान, सभी लोग निभाए सहभागिता- कलेक्टर

राजस्व एवं फॉरेस्ट विभाग के अधिकारियों की समीक्षा बैठक संपन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश गुप्ता

शहडोला। कलेक्टर श्रीमती वंदना वैद्य ने आज कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में राजस्व एवं फॉरेस्ट विभाग के अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि 1 मार्च से 5 मार्च 2022 तक पौधरोपण महा अभियान चलाया जाएगा। इसके लिए राजस्व एवं फॉरेस्ट विभाग के अधिकारी पौधरोपण हेतु भूमि चिन्हित करें तथा इसकी जानकारी कलेक्टर कार्यालय को अवगत कराना सुनिश्चित करेंगे। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि 1 से 5 मार्च 2022 तक पौधरोपण महा अभियान में सभी जनप्रतिनिधि, समाजसेवी तथा अन्य लोग सहभागिता निभाकर अधिक से अधिक पौधरोपण करें और वायदूत ऐप पर अपलोड करें। उन्होंने ने बताया कि 5 मार्च, 2022 को राज्य जिला स्तरीय समारोह में पर्यावरण विभाग के द्वारा संचालित अंकुर कार्यक्रम अन्तर्गत ठ प्राणवायु अवार्ड भी प्रदान किये जायेंगे बैठक में अपर कलेक्टर श्री अर्पित वर्मा ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिले में स्थित समस्त शासकीय कार्यालयों के भवनों, सार्वजनिक उपक्रमों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, निगम, मंडलों के कार्यालयों के प्रांगण में उपयुक्त स्थान पर पौधारोपण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त स्कूल, कॉलेज, आंगनवाडी, छात्रावास, पंचायत इत्यादि के परिसरों में भी पौधारोपण करे तथा उपलब्ध अन्य शासकीय एवं वन भूमियों पर भी पौधारोपण करना सुनिश्चित करें। बैठक में कलेक्टर ने राजस्व एवं फॉरेस्ट विभाग से संबंधित सीएम हेल्पलाइन में लंबित प्रकरणों की समीक्षा, आयुष्मान कार्ड की समीक्षा की तथा लंबित प्रकरणों का निराकरण कराने के निर्देश दिए। बैठक में डीएफओ वन श्री गौरव चौधरी, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व सोहागपुर श्री नरेंद्र सिंह धुर्वे, तहसीलदार श्री लवकुश प्रसाद शुक्ला, श्रीमती मीनाक्षी बंजारे, सहित वन विभाग के रेंजर्स उपस्थित रहे।

सनत गौतम ने पेश की मानवता की मिसाल समाजसेवी विष्णुधर उरमलिया बने नवजात के संरक्षक

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिनेश यादव

मैहर। कहते हैं माता पिता के द्वारा अपनी संतान को दिए गए संस्कार कभी ऋण ही नहीं रहते तथा उन्हीं संस्कारों से हमारी सनातन संस्कृति सुरक्षित भी रहती है। आज भी समाज में ऐसे लोग है जो वक्त पर मानवता की मिसाल पेश करते हैं। हमारी संस्कृति और सनातन ऐसे ही लोगों के सत्कर्म पर संचालित है। हम बात करेंगे 20 फरवरी 2022 की दोपहर 1:30 बजे की जहां मैहर में डॉ अशोक अवधि या निवास के समीप एक गौ माता ने हष्ट पुष्ट स्वस्थ और तंदुरुस्त बछड़े को जन्म दिया। जन्म देने के बाद गौ माता का स्वर्गवास हो गया लेकिन उसका नवजात शिशु मां के प्यार की लालसा में उसे चूम रहा था चाट रहा था। उसे पता नहीं था कि उसकी मां इस दुनिया में नहीं है और उसे कभी भी मां का प्यार और वात्सल्य नहीं मिल पाएगा। कमोबेश उसी अवसर पर राहगीर की हैसियत से ग्राम रमपुरवा मैहर निवासी सनत कुमार गौतम वहां से गुजरे। पलक झपकते श्री गौतम को सब कुछ समझ में आ गया। उन्होंने भांप लिया कि इस नवजात को संरक्षण और सुरक्षा की नितांत आवश्यकता है वरना कुत्ते आदि जानवरों द्वारा इसकी जान को खतरा हो सकता है। उचित प्रबंध होने तक उसकी सुरक्षा करना अपना कर्तव्य समझकर सनत गौतम उसकी रखवाली में बैठ गए। उन्होंने वरिष्ठ समाजसेवी डॉ राजकुमार गौतम को इस आशय की सूचना दी और उचित कदम उठाए जाने की मांग की, लेकिन शहर से 25 किलोमीटर दूर होने के कारण डॉ. राजकुमार गौतम द्वारा उक्त घटना का हवाला मीडिया के सभी ग्रुपों में प्रसारित कर मानवता के लिहाज से उचित प्रबंध बनाए जाने की आम लोगों से अपील भी की। खबर पढ़कर अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज के जिला अध्यक्ष एवं वरिष्ठ समाजसेवी पंडित विष्णुधर उरमलिया मौके पर पहुंच गए। श्री उरमलिया ने नवजात बछड़े को लाड प्यार के साथ अपनी कार में बैठाया और उसके लालन-पालन कि स्वयं जिम्मेदारी ली। उन्होंने स्वर्गवासी गौ माता को प्रणाम कर उसके पार्थिव शरीर के अंतिम विसर्जन हेतु भी आवश्यक कार्यवाही की। गौ माता के प्रति इस समर्पण भाव पर सनत गौतम एवं विष्णुधर उरमलिया के योगदान की सभी प्रबुद्ध जनों ने सराहना की तथा उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

जिला रिपोर्टर शहडोल विकेश पटेल शहडोल जिले के अन्तर्गत

(आधुनिक समाचार सेवा)
विकास पटेल

शहडोल। ब्यौहारी रेलवे स्टेशन में लगातार हो रही समस्याओं को ध्यान में रखते हुए मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष भाई आशीष गुप्ता जी,भारतीय जनता युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष भाई शिवम केसरी जी,अमन खरिया जी, पवन पटेल जी,कृष्णनंदन जी, सत्यम पटेल जी, शैलेश पटेल जी,रोहित गुप्ता जी,ध्रुव प्रताप पयासी जी,हर्षित गुप्ता जी,हरिओम तिवारी जी,सौरव यादव जी, विपिन पटेल जी,शिवराज पटेल जी,रावेंद्र पटेल जी, उपस्थित रहें। इंटरसिटी एक्सप्रेस गाड़ी संख्या (11651 जबलपुर-सिंगरौली) एवं (11652 सिंगरौली-जबलपुर)। एक साल से बंद इंटरसिटी एक्सप्रेस ट्रेन को पुन चलाये जाने की माँग करते हुए डी.आर.एम जबलपुर पश्चिम मध्य रेलवे एवं स्टेशन मास्टर ब्यौहारी के नाम ज्ञापन दिया गया एवं जल्द से जल्द इंटरसिटी ट्रेन चलाने की माँग की गई इस दौरान भारतीय जनता युवा

सेक्टर 27 के आठ घरो मे चोरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ला

नोएडा। सेक्टर-27 स्थित आठ घरों से महिला ने शनिवार को दो घंटों के भीतर मोबाइल और आईपेड चोरी कर लिए। किसी को भी वारदात की भनक नहीं लगी। जब तक पीड़ितों को वारदात का पता चला, तब तक महिला सेक्टर से फरार हो गई। पुलिस को दी शिकायत में सेक्टर-27 में रहने वाले पीड़ितों ने बताया कि सुबह मास्क लगाकर महिला सेक्टर में आई थी। वह अलग-अलग घर में घुसी और मोबाइल चोरी कर लिए। महिला ने आठ घरों में सात बजे से नौ बजे तक वारदात को अंजाम दिया। कई लोगों ने महिला को टोका तो उसने कहा कि घरेलू सहायिका का काम तलाश कर रही है। वह सेक्टर में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई। महिला के हाथ में एक लाल रंग का थैला है। पुलिस ने महिला की तलाश शुरू कर दी है।

कंपनी में चोरी कर रहे चोर को रंगे हाथ पकड़ा

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ला

नोएडा। ईकोटेक-3 पुलिस ने कंपनी में लोहे का सामान चोरी कर रहे चोर को कर्मचारियों की मदद से रंगे हाथ गिरफ्तार किया। आरोपी के पास से चोरी किए गए लोहे के पांच ओवर लिंक बरामद हुए हैं। कोतवाली प्रभारी विनोद कुमार ने बताया पकड़ा गया चोर नईम मूलरूप से नूंह मेवात, हरियाणा का रहने वाला है। वह ट्रैक्टर बनाने वाली कंपनी में चोरी कर रहा था। कंपनी के कर्मचारियों की मदद से पुलिस ने उसको रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से ट्रैक्टर लिफ्ट की ओवर लिंक बरामद हुई है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया।

नवरात्रा सेवक दल ने महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज जी का मनाया जन्मदिन

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ला

नोएडा। नवरात्रा सेवक दल ने महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में पूरे गौतमबुद्ध नगर जिले हेल्पिंग ड्राइव चलाया जिसमें जरूरतमंद लोगों को जरूरत की चीजें दी गई।आज नवरात्रा सेवक दल द्वारा जरूरतमंदों के लिए चलाई गई हेल्पलाइन हेल्पिंग 4 जरूरतमंद जिसमें नवरात्रा सेवक दल ने गौतम बुद्ध नगर के अधिकतर जगहों पर लोगों को दवा राशन कपड़े मास्क सैनिटाइजर देकर लोगों को राहत प्रदान की और अपनी पूरी टीम के सहयोग से और बहुत सारे सामाजिक संगठन के साथ होने से इस मुहिम को और बल मिला जिससे हम यह मुहिम को अच्छी तरीके से संपन्न कर पाए जिसके लिए सभी लोगों को ह्रदय से आभार धन्यवाद जिन्होंने नवरात्रा सेवक दल की मुहिम छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्मदिन के उपलक्ष्य को काफी असहाय लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाने में अपना भरसक साथ और सहयोग दिया । नवरात्र सेवक दल पिछले 5 से अधिक सालों से निरंतर समाज सेवा में लगा हुआ है निरंतर असहाय लोगों की सहायता के लिए निरंतर मुहिम चला रहा है, और आगे भी जारी रहेगा !

नगरपालिका चुनाव के नतीजों और ममता बनर्जी के वाराणसी दौरे के कारण सत्र का समय पीछे किया गया

कोलकाता। पश्चिम बंगाल का विधानसभा सत्र 7 मार्च से शुरू किया जा रहा है। मालूम हो कि यह बजट सत्र होगा जो मार्च के पहले हफ्ते में ही होने की बात थी। जानकारी के अनुसार 108 नगरपालिका चुनाव के नतीजों और ममता बनर्जी के वाराणसी दौरे के कारण सत्र का समय पीछे किया गया है। नवान्न सूत्रों की माने तो ममता बनर्जी 2 मार्च को वाराणसी के लिए रवाना होने वाली हैं। वहां 3 मार्च को उनका राजनीतिक कार्यक्रम है तथा वह शिव मंदिर में पूजा करेंगी।

दुबई भेजने के नाम पर 9.80 लाख रूपये ठगे

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ला

नोएडा। सेक्टर-2 स्थित कंपनी के अधिकारियों ने टूर पैकेज पर लोगों को दुबई भेजने के नाम पर 9.80 लाख रुपये ठग लिए। इस संबंध में एक पीडित ने आरोपियों पर धोखाधड़ी का केस दर्ज कराया है। पुलिस को दी शिकायत में मध्य प्रदेश के रहने वाले विशाल प्रीत मनी ने बताया कि सेक्टर-2 में विदेश के टूर पर भेजने वाली कंपनी है। कंपनी के लोगों से उनकी सोशल मीडिया के माध्यम से बात हुई। इन लोगों ने चार लोगों को दुबई भेजने के नाम पर उनसे 1.80 लाख रुपये लिए। पीडित का आरोप है कि आरोपियों ने करेंसी बदलने के बहाने सात लाख 99 हजार 50 रुपये ले लिए। कंपनी की मालिक अंजली यादव, अरमान और गौरव ने उनके साथ धोखाधड़ी कर उनसे नौ लाख 79 हजार रुपये ठग लिये। इसके बाद न तो दुबई भेजा और न ही पैसे वापस किए। जब पीडित ने आरोपियों से पैसे मांगे तो जान से मारने की धमकी दी। पुलिस जांच में सामने आया है कि कंपनी के अधिकारियों ने पीडितों को सस्ते दर पर विदेश घुमाने का झांसा देकर ठगी की है। पीडितों का आरोप है कि कंपनी के अधिकारियों ने विदेश घुमाने का झांसा देकर सैकड़ों लोगों से लाखों रुपये की ठगी की है। इसको लेकर कई अन्य पीडितों ने भी पुलिस को शिकायत दी है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामले की जांच शुरू कर दी है। मामले का खुलासा होने के बाद आरोपी अपना ऑफिस बंद कर फरार हो गए हैं। उनकी तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है। पुलिस ने उनके पते के बारे में जानकारी जुटा ली है।

साल 1996 से लालू के पीछे पड़ा चारा घोटाले का जिन्न, जानें कितनी मिल चुकी सजा और कब-कब गए जेल

पटना। चारा घोटाला के डोरांडा कोषागार मामले में रांची की सीबीआइ अदालत राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को दोषी करार दे चुकी है। अदालत आज इस मामले में लालू की सजा की अवधि पर फैसला करेगी। वे इसके पहले भी चारा घोटाला के चार अन्य मामलों में सजायाफ्ता हो चुके हैं। अभी तक मिल चुकी इन सजाओं को जोड़ दें तो चारा घोटाला के चार मामलों में लालू को 27.5 साल की सजा हो चुकी है। दरअसल, चारा घोटाला का जिन्न लालू के पीछे साल 1996 से ही पड़ा है। उसी साल पटना हाईकोर्ट की निगरानी में चारा घोटाला की सीबीआइ जांच शुरू हुई थी। इस जांच ने 30 जुलाई 1997 को उनके पटना की विशेष अदालत में सरेंडर व पहली बार जेल जाने की पटकथा लिखी थी। था। इसके पहले 25 जुलाई 1997 को विशेष अदालत द्वारा गिरफ्तारी का वारंट निर्गत होने पर उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़नी पड़ी थी। लालू को पहली बार 30 जुलाई 1997 को जेल जाना पड़ा था। इस दौरान वे कुल 135 दिन जेल में रहे। आगे 28 अक्टूबर 1998 को दूसरी बार 73 दिनों के लिए जेल गए।

भाजपा से आगे निकलने में जुटी कांग्रेस, टिकट के लिए आए 1000 आवेदन

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम चुनाव 2022 होने में अभी समय है, लेकिन सत्तासीन भारतीय जनता पार्टी और आम आदमी पार्टी के बाद कांग्रेस ने भी इसके लिए कमर कस ली है। भाजपा-आम आदमी पार्टी की तर्ज पर कांग्रेस भी तीनों नगर निगमों के चुनाव में तैयारी में जुट गई है। कहा जा रहा है कि इस बार कांग्रेस सत्तासीन आम आदमी पार्टी और भाजपा से खुद को पीछे नहीं रखना चाहती है। खासतौर से टिकटों को लेकर अभी से कवायद तेज हो गई है। इस संबंध में मिली ताजा जानकारी के मुताबिक, दिल्ली नगर निगम चुनाव-2022 के लिए कांग्रेस की टिकट के लिए आवेदन पत्र प्राप्त करने वालों की संख्या 1000 पहुंच गई है। इस बाबत दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चौधरी अनिल कुमार ने जारी बयान में कहा कि यह बहुत ही उत्साह जनक संख्या है 15 फ़रवरी रखी गई थी, मगर कार्यकर्ताओं की भारी मांग के चलते 18 फ़रवरी किया गया था। उन्होंने ने कहा के अंतिम तारिख के बाद भी कांग्रेस कार्यकर्ता फ़ार्म जमा करवाने के लिए प्रदेश कार्यालय में आ रहे है जिसका फ़ैसला हाई कमांड से बात करके लिया जाएगा कि फ़ार्म लेने की तारिख को कितने और दिनों के लिए बढ़ाया जाए । उन्होंने कहा की कांग्रेस कार्यकर्ताओं के आवेदन जमा करवाने के उत्साह से संकेत साफ़ है कि कांग्रेस निगम चुनाव में बहुत अच्छा प्रदर्शन करेगी।

चौटाला परिवार में अब दिल मिलना मुश्किल, जजपा और इनेलो के विलय पर ओपी चौटाला का बड़ा बयान

चंडीगढ़। हरियाणा में चौटाला परिवार में अब दिलों का मिलना मुश्किल लग रहा है और ऐसा लगता है कि परिवार में कभी समात न होने वाली दूरी हो चुकी है। जननासक जनता पार्टी के अध्यक्ष अजय सिंह चौटाला के परिवार में एकता की पेशकश को जिस तरह से उनके पिता ओमप्रकाश चौटाला ने जिस तरह से खारिज किया है, उससे साफ होता है कि अब इस सियासी परिवार में एकता संभव नहीं है। हरियाणा में भाजपा-जजपा गठबंधन के विरुद्ध तीसरा मोर्चा बनाने की संभावनाओं के बीच इनेलो प्रमुख ओमप्रकाश ने साफ कर दिया है कि उनके बेटे अजय सिंह चौटाला

के नेतृत्व वाली जननायक जनता पार्टी और इनेलो का आपस में विलय किसी सूरत में संभव नहीं है। सजा पूरी करने के बाद जेल से रिहा हुए अजय सिंह चौटाला ने कहा था कि यदि उनके पिता ओमप्रकाश चौटाला चाहेंगे तो इनेलो व जजपा एक हो सकते हैं। इसके नियम और शर्तें क्या होंगी, यह बाद की बात है। ओमप्रकाश चौटाला और अभय चौटाला हालांकि पहले भी यह कई बार कह चुके है कि इनेलो का जजपा में विलय संभव नहीं, लेकिन जब भी विलय की संभावना बनती है तो अजय चौटाला अपने पिता और छोटे भाई के पाले की तरफ गेंद सरका देते हैं। चौटाला परिवार में चल रही इस गेंदबाजी से पुराना वर्कर असमंजस में है। इनेलो प्रमुख ओमप्रकाश चौटाला 87 साल की उम्र के बावजूद राजनीतिक तौर पर खासे सक्रिय बने हुए है। आजकल वह प्रदेश के दौरे पर है और लोगों के शादी-ब्याह तथा सामाजिक कार्यक्रमों में पूरी सक्रियता से भागीदारी कर रहे है। उम्र के इस पड़ाव में भी चौटाला मीडिया के सवालों का बखूबी सामना करते हैं और उनके बखूबी जवाब देते है।

'बच्चन पांडे' से लेकर 'गंगूबाई काठियावाड़ी' तक, जानिए ओटीटी पर कहां रिलीज होंगी ये फिल्मे

नई दिल्ली। सिनेमा घरों में एक बार फिर से रौनक हो गई है। कोरोनी की तीसरी लहर में थियेटर्स बंद होने के बाद मेकर्स ने ओटीटी प्लेटफॉर्म का रुख किया था। फिल्मों के लिए भी ओटीटी एक अच्छा प्लेटफॉर्म साबित हो रहे है। लोगों के लिए ओटीटी एक सरल ऑपशन है, एक के बाद एक बड़ी फिल्में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध हैं। जल्दी ही बॉक्स ऑफिस को कुछ बड़ी हिट करने वाली है, जिसमें आलिया भट्ट की गंगूबाई काठियावाड़ी और अक्षय कुमार की बच्चन पांडे भी शामिल हैं। तो आइए हम आपको बताते हैं कि ये फिल्में थिएटर के बाद ओटीटी पर कब और कहां रिलीज होंगा बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' 25 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। इसके बाद इसे ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम किया जाएगा। सुपरस्टार अक्षय कुमार की फिल्म बच्चन पांडे 18 मार्च को देशभर के सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी। थियेटर में रिलीज के बाद यह फिल्म अमेजॉन प्राइम वीडियो पर भी स्ट्रीम की जाएगी। दर्शक अपने फेवरेट स्टार की फिल्म के लिए खासे एक्साइटेड हैं। इस फिल्म रिलीज डेट पर अपनी कंफ्यूजन बरकरार है। पर ये तय है कि अपनी थियेटर रिलीज के बाद ये किस ओटीटी प्लेफॉर्म पर दिखाए जाएगी। दरअसल, आरआरआर को दो अलग ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर स्ट्रीम किया जाएगा। यह फिल्म जी5 पर तमिल, तेलुगू, मलयाल और म कन्नड़ भाषा में उपलब्ध रहेगी। जबकि नेटफ्लिक्स पर हिंदी, इंग्लिश, पुर्तगीज, कोरियन, स्पेनिश और टरकिश भाषा में स्ट्रीम होगी। राजकुमार राव और भूमि पेडणेकर की फिल्म बधाई दो ने 11 फरवरी को सिनेमाघरों में दस्तक दी है। इस फिल्म को जल्द ही जी5 पर रिलीज किया जाएगा। फिल्म के सब्जेक्ट की वजह से जो सिनेमाघर का रूख नहीं कर पाए उन्हें इसकी ओटीटी रिलीज का बेसब्री से इंतजार है। पवन कल्याण और राणा दग्गुबाती की ये फिल्म 25 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी। इसके साथ ही इसे डिजने प्लस हॉटस्टार पर बाद में दिखाया जाएगा।

करियर के शुरुआती दिनों में दीपिका पादुकोण और कटरीना कैफ ऐसे करती थीं 'एडजस्ट', खुद करने पड़ते थे ये सब काम

नई दिल्ली। दीपिका पादुकोण और कटरीना कैफ इस समय बॉलीवुड की बड़ी अभिनेत्रियों में से एक हैं। दोनों ने अब तक अपने करियर में कई हिट फिल्में दी हैं। साथ ही बड़े कलाकारों के साथ काम भी किया है, लेकिन जब दीपिका पादुकोण और कटरीना कैफ ने फिल्म इंडस्ट्री में अपने करियर की शुरुआत की थी तो यह दोनों अभिनेत्री बहुत सी चीजों से अनजान थीं। इस बात की खुलासा खुद दीपिका पादुकोण ने किया हैं। उन्होंने हाल ही में अंग्रेजी वेबसाइट एनडीटीवी से बातचीत की। इस दौरान दीपिका पादुकोण ने अपनी नई फिल्म गहराइयां सहित करियर को लेकर लंबी बात की। अपने शुरुआती करियर पर बात करते हुए उन्होंने बताया है कि फिल्म इंडस्ट्री में शुरुआती दिनों में उनके पास न तो कई पीआर था न ही कोई मैनेजर। इतना ही नहीं दीपिका पादुकोण और कटरीना कैफ अपना मेकअप भी खुद से करती थीं। दीपिका पादुकोण ने कहा, 'जब मैंने शुरुआत की थी, मेरे पास कोई पीआर एजेंट या मैनेजर नहीं था। मैं अपने बाल और मेकअप खुद करती थी। मैं अपने कपड़े खुद पहनती थी। मेरे अलावा कैटरीना कैफ भी ऐसी करती थी, जहां हमारे पास बहुत कुछ नहीं था। फिर वह कल्चर आने लगा और हम उस कल्चर में ढलते चले गए। जबकि आज के लड़के-लड़कियां पहले से पूरी तरह से तैयार हैं। दिग्गज अभिनेत्री ने कहा, 'उन्हें बताया जाता है कि कैसे खड़े रहना है, कैसे बैठना है, कैसे व्यवहार करना है, क्या कहना है, क्या नहीं कहना है, क्या पहनना है, क्या नहीं पहनना है, उन्हें अपने बाल कैसे करने चाहिए, उन्हें अपना मेकअप कैसे करना चाहिए। मेरे बारे में कहते हैं 'यह अविश्वसनीय है हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं था। हम इसमें विकसित हुए, हमने रास्ते में अपनी गलतियां कीं, लेकिन मेरा एक हिस्सा भी इसकी सराहना करता है क्योंकि यह आपको यह समझने का अवसर देता है कि आप कौन है। इसके अलावा दीपिका पादुकोण ने अपने बारे में और भी ढेर सारी बातें कीं। गौरतलब है कि कटरीना कैफ ने बॉलीवुड में अपने करियर की शुरुआत साल 2003 में फिल्म से की थी। यह एक मल्टीस्टारर फिल्म थी। हालांकि कटरीना कैफ की यह फिल्म बॉक्स ऑफ पर कुछ खास कमाल नहीं दिख सकी। वहीं दीपिका पादुकोण ने साल 2007 में फिल्म ओम शांति ओम से बॉलीवुड में कदम रखा। इस फिल्म में उनके साथ अभिनेता शाह रुख खान मुख्य भूमिका में थे। यह फिल्म हिट साबित हुई थी।

फरहान अख्तर की शादी में ऋतिक रोशन ने जमकर किया डांस, 'सैनोरीटा' पर दोनों दोस्त थिरकते आए नजर

नई दिल्ली। बॉलीवुड के मल्टी-टैलेंटेड एक्टर फरहान अख्तर अपनी लॉन्गटाइम गर्लफ्रेंड शिबानी दांडेकर संग शादी के बधंन में बंध गए हैं। दोनों की शादी में उनके परिवार वालें और बॉलीवुड के कुछ सेलेब्स पहुंचे। शादी के बाद अब इस सेलिब्रिटी वेडिंग की फोटोज और वीडियोज तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। जिनमें से एक वीडियो में दूल्हे राजा फरहान अपने दोस्त ऋतिक रोशन संग जमकर डांस करते नजर आए। वीडियो में फरहान और ऋतिक साल 2011 में आई अपनी सुपरहिट फिल्म 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा' के फेमस सॉन्ग 'सैनोरीटा' पर डांस कर रहे हैं और दोनों वही स्टैप्स फॉलो कर रहे हैं जो दोनों ने फिल्म के गाने में किए थे। दोनों का यह डांस वीडियो लोगों को खूब पसंद आ रहा है और फिल्म की यादें ताजा कर रहा है। फरहान और शिबानी की शादी के कई वीडियोज उनके फैन पेज पर शेयर किया गया। जिनमें से एक और वीडियो में ऋतिक रोशन कोरियोग्राफर फराह खान संग फिल्म 'दिल चाहता है' के गाने पर थिरकते दिखे। इनके अलावा फरहान ने भी इस गाने पर अपनी वाइफ संग डांस किया। आपको बता दें कि फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर ने चार साल तक एक दूसरे को डेट करने के बाद 19 फरवरी 2022 को जावेद अख्तर और उनकी पतने शबाना आजमी के खंडाला स्थित घर सुकून में शादी की। शादी में शिबानी ने रेड कलर का गाउन पहना था तो वहीं फरहान ब्लैक कलर के सूट में नजर आए। सेरेमनी में फराह खान, रिया चक्रवर्ती, सतीश शाह, अनुषा दांडेकर, अपेक्षा दांडेकर, आशुतोष गोवारिकर और रितेश सिदवानी समेत कई हस्तियां शामिल हुई। फरहान अख्तर की शादी की खबरों पहले एक्टर के पिता जावेद अख्तर ने कंफर्म किया था। जावेद अख्तर ने अपने एक इंटरव्यू में कहा था कि 'हां, शादी हो रही है, वेडिंग प्लानर शादी की बाकी तैयारियां कर रहे हैं।'

तेजस्वी प्रकाश और सिंबा नागपाल के फैंस जानें क्यों हुए गुस्सा, मेकर्स से किया ये आवाहन

नई दिल्ली। नागिन 6 में तेजस्वी प्रकाश की अहम भूमिका है अब शो के फैंस काफी नाराज है कि तेजस्वी प्रकाश और सिंबा नागपाल के सीन शो में अभी तक काफी कम है दर्शकों का कहना है कि वह उन दोनों को ज्यादा देखना चाहते हैं एकता कपूर का शो नागिन एक बार फिर शुरू हो गया है यह अपनी घोषणा से ही चर्चा में है शो में तेजस्वी प्रकाश की अहम भूमिका है तेजस्वी प्रकाश बिग बॉस 15 की विजेता है नागिन 6 शो में सिंबा नागपाल, उर्वशी ढोलकिया, अदा खान, सुधा चंद्रन और महक चहल की भी अहम भूमिका है शो में तेजस्वी प्रथा की भूमिका निभा रही है वहीं सिंबा नागपाल ऋषभ की भूमिका में हैत् दोनों की केमिस्ट्री काफी पसंद की जा रही है हालांकि दर्शक दोनों को अधिक देखना चाहते हैं हालिया एपिसोड में शेष नागिन अधिक दिखाई जा रही है, जबकि उर्वशी ढोलकिया को भी अधिक समय मिल रहा है तेजस्वी और सिंबा को कम सीन मिल रहे हैं इसके चलते ट्विटर पर दर्शकों ने निर्माताओं को खरी-खोटी सुनाई है दोनों सिंबा नागपाल और तेजस्वी प्रकाश को अधिक देखना चाहते हैं तेजस्वी और सिंबा के प्रशंसकों ने निर्माताओं से आह्वान किया कि दोनों को ज्यादा दिखाएं एक ट्विटर यूजर ने लिखा है, 'तेजा कब से काम कर रही हैत् हालांकि उसे शो में दिखाया नहीं जा रहा है वहीं एक अन्य ने लिखा है, 'हम दोनों को साथ में देखना चाहते हैं एक फैन ने लिखा है, 'दोनों को और समय दीजियेत् दोनों साथ में बहुत अच्छे लगते हैं नागिन 6 में के बारे में तेजस्वी प्रकाश ने कहा था, 'मुझे नहीं पता था कि मुझे नागिन 6 में काम करने का मौका मिलेगात् मैं इस शो के लिए ना नहीं कर पाई यह शो बहुत अच्छा है मैं अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकल कर काम करना चाहती हूंत् मैंने ऐसा पहले कुछ नहीं किया है।'

लीक हुआ शाह रुख खान का 'पठान' वाला लुक आखिर क्या है इस वायरल फोटो का सच

नई दिल्ली। शाह रुख खान और दीपिका पादुकोण इन दिनों अपनी मोस्ट अवेटेड फिल्म 'पठान' को लेकर काफी व्यस्त चल रहे हैं। हाल ही में खबर आई थी कि फिल्ममेकर दीपिका-शाहरुख पर एक रोमांटिक सॉन्ग की शूटिंग के लिए स्पेन जाने की तैयारी में हैं। शाह रुख फिल्म को पूरी तरह से परफेक्ट बनाना चाहते हैं। पर इसी बीच सोशल मीडिया शाह रुख का पठान वाला लुक लीक हो गया। सॉल्ट एंड पेप लुक, बढ़े हुए बालों में किंग खान काफी डिफरेंट नजर आ रहे हैं। फैंस भी अपने सुपरस्टार को पहली बार इस तरह देख बेहद खुश हैं। दरअसल, सोशल मीडिया पर शाह रुख खान की एक तस्वीर वायरल जमकर वायरल हो रही है। दावा किया जा रहा है कि ये उनकी अपकमिंग फिल्म 'पठान' का लुक है। फैंस इसपर काफी रिएक्शन दे रहे हैं। पर आपको बता दें कि ये फोटो मॉफ्ड है। फोटोशॉप करके शाह रुख की ये तस्वीर बनाई गई है। 4 साल पहले सेलिब्रिटी फोटोग्राफर डब्बू रतनानी के लिए शाह रुख ने ये फोटोशूट करवाया था, जिसे अब फोटोशॉप किया गया है। डब्बू रतनानी ने शाह रुख की इस तस्वीर को अपने फेसबुक अकाउंट पर 2 नवंबर, 2017 को शेयर किया था। अब शाह रुख की इसी तस्वीर को एडिट करके इसे उनकी फिल्म 'पठान' का न्यू लुक बताया जा रहा है। बता दें कि इस फिल्म में शाह रुख खान, दीपिका पादुकोण के अलावा जॉन अब्राहम विलेन का किरदार निभा रहे हैं। ये एक जासूसी थ्रिलर फिल्म है जिसे वॉर, बैंग बैंग, सलाम नमस्ते और अंजाना अंजानी फेम सिद्धार्थ आनंद ने डायरेक्ट किया है। फिल्म में सलमान खान का एक विशेष कैमियो होगा, जो रॉ एजेंट टाइगर उर्फ मनीष चंद्र की अपनी भूमिका को फिर से निभाएगा। पठान का संगीत विशाल-शेखर की जोड़ी ने दिया है और फिल्म के 2022 के एंड तक स्क्रीन पर रिलीज होने की उम्मीद है। वहीं शाहरुख के पास राजकुमार हिरानी की एक और अनटाइटल्ड फिल्म भी है।

'प्यार का पंचनामा' के डायरेक्टर लव रंजन ने गर्लफ्रेंड अलीशा संग लिए सात फेरे

नई दिल्ली। 'प्यार का पंचनामा' और 'सोनू के टीटू की स्वीटी' जैसी हिट फिल्मों के डायरेक्टर और प्रड्यूसर लव रंजन ने अपनी लॉन्ग टाइम गर्लफ्रेंड अलीशा वैद्य संग सात फेरे ले लिए। आगरा के एक पॉश होटल में निजी समारोह में उन्होंने ये शादी की। इस दौरान बॉलीवुड के कई सेलेब्स इस फंक्शन में शामिल होने आगरा पहुंचे। जिसमें रणबीर कपूर, कार्तिक आर्यन और अर्जुन कपूर मुख्य अतिथि थे। लव रंजन और अलीशा की शादी में शामिल हुए बॉलिवुड स्टार्स में रणबीर कपूर, अर्जुन कपूर, श्रद्धा कपूर, वरुण शर्मा, कार्तिक आर्यन, सनी सिंह, नुसरत भरूचा, फिल्ममेकर दिनेश विजन और भूषण कुमार समेत कई हस्तियां शामिल थीं। मीडिया की पहुंच से दूर लव रंजन की इस शादी में उनके दोस्तों के अलावा सिर्फ परिवार के लोग और करीबी रिश्तेदार ही मौजूद थे। लव रंजन की दुल्हनिया अलीशा वैद्य के बारे में बताया जा रहा है कि लव और अलीशा की पहली मुलाकात कॉलेज के दौरान हुई थी। तभी दोनों के बीच दोस्ती हुई और आगे जाकर ये रिश्ता प्यार में बदल गया। दोनों कॉलेज टाइम से एक दूसरे को डेट कर रहे थे। पिछले दिनों इस कपल को मनीष मल्होत्रा के स्टोर के चक्कर लगाते हुए भी देखा गया था। लव रंजन और अलीशा वैद्य ने अपनी वेडिंग के लिए मशहूर सेलिब्रिटी डिजाइनर मनीष मल्होत्रा और सब्यासाची मुखर्जी का डिजाइनर आउटफिट चुना। शादी की रस्में दो दिन पहले ही शुरू हुई थीं। तस्वीरें वायरल हो रहीं हैं। फरवरी को सात फेरे लेने के बाद उसी दिन शाम को इस जोड़े ने रिसेप्शन रखा गया। वहीं वर्क फ्रंट की बात करें तो लव रंजन इसी साल रणबीर कपूर और श्रद्धा कपूर के साथ ब्रह्मास्त्र लेकर आ रहे हैं। इस फिल्म का कुछ हिस्सा स्पेन में भी शूट किया जाएगा।

अवॉर्ड जीतने के बाद सिद्धार्थ मल्होत्रा ने सबके सामने लगाया कियारा आडवाणी को गले

नई दिल्ली। बॉलीवुड अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा और अभिनेत्री कियारा आडवाणी को लेकर काफी समय से ऐसी अफवाह है कि यह दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। दोनों को अक्सर साथ में भी देखा जाता है। हालांकि आधिकारिक तौर पर न तो सिद्धार्थ मल्होत्रा ने और न ही किराया आडवाणी ने अपने रिश्ते को लेकर बयान दिया है। लेकिन यह दोनों एक बार फिर से खास वजह से चर्चा में हैं। रविवार 20 फरवरी को दादा फाल्के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल का आयोजन रखा गया था। इस फेस्टिवल में सिद्धार्थ मल्होत्रा को फिल्म शेरशाह के लिए बेस्ट एक्टर क्रिटिक्स अवॉर्ड मिला। इस अवॉर्ड को हासिल करने के बाद सिद्धार्थ मल्होत्रा रुमर्ड गर्लफ्रेंड कियारा आडवाणी से मिले और सबके सामने उन्हें गले भी लगाया। कियारा आडवाणी को गले लगाते हुए सिद्धार्थ मल्होत्रा के वीडियो को सिलेब्रिटी फोटोग्राफर विरल भियानी ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया है।

शो में आएगा नया भूचाल, बेटे समर के साथ बढ़ेगी जानें क्यों अनुपमा की दूरियां

नई दिल्ली। अनुपमा में एक नए ट्रैक की शुरुआत होने जा रही है अनुपमा और उनके बेटे समर के बीच की दूरियां बढ़ती नजर आएंगी दरअसल समर और नंदिनी के बीच दूरियां बढ़ रही है जिसका प्रभाव समर और अनुपमा के रिश्ते पर भी पड़ेगात् समर अनुपमा से दूर हो जाएंगे अनुपमा शो वर्तमान में टीवी का नंबर वन शो है यह शो टीआरपी में नंबर वन पर बने हुए हैं अब शो में एक नया ट्रैक शुरू हुआ है हाल ही में अनुपमा और अनुज कपाडिया एक-दूसरे के करीब आ रहे हैंत् इसके चलते शाह परिवार चिंतित भी है बा और वनराज अनुपमा से इस बात को लेकर बात भी करते हैं और नाराज भी होते हैंत् हालांकि अनुपमा अपनी बातों पर अडिग रहती है इस बीच समर और नंदिनी की प्रेम कथा एक अनचाही मोड़ लेती है दोनों अलग हो जाते हैं इसके चलते दोनों का दिल टूट जाता है और अनुपमा का जीवन भी प्रभावित होता है अब अनुपमा शो में समर के जीवन में नई लड़की आती है जो कि काफी खराब होती है इसके चलते वह समर और उनकी मां के रिश्ते को खराब करती है आगामी कहानी में समर का व्यक्तित्व और माइंडसेट परिवार के प्रति बदल जाएगात् समर मां को छोड़ नई लड़की के साथ रहते है जोकि अनुज और अनुपमा के रिश्ते पर भी प्रभाव डालता है क्या अनुपमा नई लड़की को बेटे को दूर ले जाने से रोक पाएगीत् इस बात के लिए शो देखते रहना होगा। अनुपमा शो में अनुपमा की भूमिका रुपाली गांगुली निभाती है वहीं शो में अनुज कपाड़िया की भूमिका गौरव खनन निभाते हैक वहीं शो में वनराज सुधांशु पांडे बने है और काव्या मदालसा शर्मा बनी है।

आर बाल्की की अगली फिल्म में क्रिकेट कोच का किरदार निभा रहे हैं अभिषेक बच्चन

नई दिल्ली। बॉलीवुड फिल्म निर्माता वक्त-वक्त पर स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्में रिलीज कर फैंस का ध्यान अपनी मूवी की ओर आकर्षित करने में कामयाब रहे हैं। आने वाले दिनों कई क्रिकेट ड्रामा फिल्में पर्दे पर रिलीज होने वाली हैं, जिसमें जर्सी, शबाशा मिट्ठू, चकड़ा एक्सप्रेस जैसी बड़ी फिल्में शामिल हैं। अब जानकारी सामने आ रही है कि आर बाल्की भी क्रिकेट पर आधारित फिल्म पर काम शुरू करने वाले हैं, जिसमें जूनियर बच्चन क्रिकेट कोच की भूमिका में नजर आएंगे। ईटाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, इस फिल्म में अभिनेत्री सैयामी खेर एक खिलाड़ी के किरदार निभाती हुई दिखाई देंगी, जबकि अभिषेक बच्चन उनके कोच का मुख्य किरदार निभा रहे हैं। फिल्म में जूनियर बच्चन, सैयामी खेर के साथ एक्ट्रेस शबाना आजमी भी मुख्य भूमिका में नजर आने वाली हैं। हालांकि इस फिल्म को लेकर अभी कोई आधिकारिक एलान नहीं हुआ है। बात अगर उनके वर्कफ्रंट की करें तो वो तुषार जलोटा के निर्देशन में बनने वाली फिल्म दसवीं में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में वो एक दिग्गज राजनेता का किरदार निभाते हुए दिखाई देंगे। फिल्म में अभिषेक के अलावा अभिनेत्री यामी गौतम एक पुलिस आधिरकारी के किरदार में नजर आने वाली हैं, जबकि एक्ट्रेस ब्रिमर कौर भी मुख्य किरदार निभाती हुई दिखाई देंगी।इ इसके अलावा वो अनुराग कश्यप के निर्देशन में बनने वाली फिल्म गुलाब जामुन में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में अभिनेता अपनी पतने ऐश्वर्या राय बच्चन के साथ मुख्य किरदार निभा रहे हैं। हालांकि अभी फिल्म के बारे में निर्माताओं ने आधिकारिक जानकारी साझा नहीं की है। अभिनेता इन दिनों बहुचर्चित ब्रीद इनटू द शैडो के अगले सीनज पर भी काम कर रहे हैं। अभिषेक बच्चन को आखिरी बार शाहरुख खान की कंपनी रेड चिलीज एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी फिल्म बॉब बिस्वास में देखा गया था।

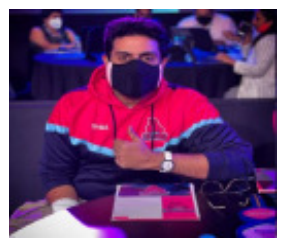

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए
बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र.) 211002 से मुद्रित
एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी
औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।